ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 10 जून 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 10 जून 2018 से 16 जून 2018

ज्येष्ठ कृ. – 11 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 23, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डॉ. पूनम सूरी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पुनः निर्विरोध प्रधान निर्वाचित

सभा का 123वाँ वार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का 123वीं वार्षिक साधारण अधिवेशन 27 मई 2018 को आर्य समाज (अनारकली) के सभागार में सम्पन्न हो गया। भीषण गर्मी के बावजूद देश भर से 281 प्रतिनिधियों ने अभूतपूर्व उपस्थिति देकर सभां के प्रति विश्वास व्यक्त किया।

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी को पुनः निर्विरोध रूप से वर्ष 2018–19 के लिए सभा प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। उपप्रधान पद पर श्री प्रबोध महाजन, मंत्री पद पर श्री एस.के. शर्मा, सहमंत्री पद पर श्री सत्यपाल आर्य, कोषाध्यक्ष पद पर भी श्री बलदेव जिंदल एवं पुस्तकालयध्यक्ष पद पर श्री जे.पी. शूर निर्वाचित किए गए। चुनाव सम्पन्न कराने हेतु ब्रि. ए.के. अदलखा को सर्वसम्मति से निर्वाचन अधिकारी चुना गया। प्रांतीय सभाओं, आर्य युवा समाज के प्रांतीय अधिकारियों को नामित करने का अधिकार सर्वसम्मति से प्रधान जी को दिया गया।

नवनिर्वाचित सभा प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने उनमें प्रदर्शित विश्वास के लिए सबका धन्यवाद किया। मान्य प्रधान जी ने अपने संबोधन में संगठन को और अधिक दृढ़ बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज को विघटन से बचाना आज की सबसे बड़ी चुनौती है। इसके लिए प्रेम, सौहार्द और सहयोग का वातावरण बनाने का उत्तरदायित्व हम सब पर है। मतभेद हो सकता है। अनचाहे में लोग दुश्मन से भी लगने लगते हैं लेकिन यह बात समझ लेनी चाहिए कि दुश्मन बुरा नहीं होता, दुश्मनी बुरी होती है। उन्होंने कहा कि आज हमें पूर्णतया आत्मिक रूप से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में लगना होगा।

लार्ड मैकाले द्वारा इस देश की शिक्षा और संस्कृति को पहुंचाये नुकसान का जिक्र करते हुए मान्य प्रधान जी ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों के प्रसार और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को सबसे आवश्यक बताते हुए सदन को सूचित किया कि सरकार से यह आग्रह किया जा रहा है कि उच्च माध्यमिक परीक्षाओं की प्रमाण पत्रों में विद्यार्थियों द्वारा नैतिकता और चरित्र को लेकर प्रदर्शित व्यवहार के अंक दर्ज किए जाने चाहिए जिससे इस विषय का महत्व रेखांकित हो सके। प्रधान जी ने आर्य समाज नागौरी गेट हिसार के प्रधान श्री हरि सिंह सैनी तथा उनके साथ आए अन्य महानुभावों का भाव–भरा स्वागत किया।

श्री हरिसिंह सैनी (आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार) ने कहा कि हम सबको मिलकर शिक्षा के साथ–साथ आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में लग जाना चाहिए। आपस में जो मन मुटाव है, उसको समाप्त करके अपनी क्षमता के अनुसार आर्य समाज के कार्यों में लग जाना चाहिए। मैं आज इस मंच से बोलते हुए इतना गद्गद् हो रहा हूँ कि मुझसे शब्द नहीं बन पा रहे हैं।

अधिवेशन में सभामंत्री ने वर्ष 2017–18 का वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया और साथ ही वर्ष 2018–19 का वार्षिक बजट प्रस्तुत किया, जिसकी सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई।

अधिवेशन में उपस्थित प्रतिनिधियों और अधिकारियों से सभा के कार्यों को गतिशील बनाने के लिए सुझाव मांगे गए, जिसमें श्री अजय सहगल (दिल्ली), श्री अरविंद घई (जालंधर), ब्रि. ए.के.अदलखा (आर्य समाज अनारकली), श्री अनिल आर्य (पुण्डरी), श्री लखीराम फौजी (दादुपुर) आदि ने सभा को अधिक सक्रिय और गतिशील बनाने के सुझाव दिए। इनके अतिरिक्त श्री मामचंद रिवारिया (दिल्ली) तथा श्री सीताराम आर्य (हिसार) ने भी लिखित सुझाव दिए। इन सुझावों में डी.ए.वी. के माध्यम से आर्य समाजी बच्चों को कोचिंग देना, प्रत्येक शुभ कार्य से पूर्व यज्ञ करना, कुरीतियों को समाप्त करना, आर्य समाज एवं डी.ए.वी.

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 10 जून 2018 से 16 जून 2018

ब्रह्म-कवच से रक्षित

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं, कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या याः, मा मानुषीरवसृष्टा वधाय।।
अथर्व17.1.28

ऋषिः **ब्रह्मा।** देवता **आदित्यः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(अहं)** मैं **(ब्रह्मणा)** ब्रह्म–रूप **(वर्मणा)** कवच से [तथा] **(कश्यपस्य)** द्रष्टा आत्मा की **(ज्योतिषा)** ज्योति से **(वर्चसा च)** और वर्चस्विता से **(परीवृतः)** आच्छादित [होऊँ]। **(याः)** जो **(दैव्याः)** दैवी **(इषवः)** बाण हैं, वे **(मा)** मुझे **(मा)** मत **(प्रापन्)** प्राप्त हों, **(मा)** न ही **(बधाय)** वध के लिए **(अवसृष्टाः)** छोड़े हुए **(मानुषी)** [इषवः] मानुषी बाण [प्राप्त हों]।

●संसार में रहते हुए मुझे अनेक दैवी और मानुषी विपत्तियों से संघर्ष करना है। देखो, कैसे–कैसे दैवी बाणों का मुझपर प्रहार हो रहा है। कभी भूकम्प आ रहे हैं, कभी सर्वनाशिनी आँधियाँ चल रही हैं, कभी असमय ओले वरस रहे हैं, कभी ज्वालामुखी फूट रहे हैं, कभी अतिवृष्टियाँ और अनावृष्टियाँ हो रही हैं, कभी दुर्भिक्ष पड़ रहे हैं, कभी नदियों में विनाशलीला मचा देनेवाली बाढ़े आ रही हैं, कभी उल्कापातों की झड़ी लग रही है कभी भूमि फट रही है, कभी ऋतुओं में अव्यवस्था हो रही है, कभी महामारियाँ फैल रही हैं। इन सब दैवी बाणों के प्रहार मुझ मानव को क्षणभर में नष्ट–भ्रष्ट कर सकते हैं। दूसरी और मानुषी बाणों पर,मनुष्य द्वारा उत्पन्न की गई विपत्तियों पर भी दृष्टिपात करो। तलवारें खनखना रही हैं, तोपें गोले बरसा रही हैं, बन्दूकों की गोलियाँ सिर पर से निकट रही है, संधातक विस्फोट किये जा रहे हैं। ऐटम–बम छोड़े जा रहे हैं, विषैली गैसें फैलाई जा रही हैं, नये–से–नये संहारक आविष्कार किये जा रहे हैं। इन सब मानुषी बाणों से भी मैं विपद्ग्रस्त तथा जर्जर हो गया हूँ, और मानव–जाति संहार के कगार पर खड़ी प्रतीत हो रही है।

इस प्रकार के दैवी और मानवी बाणों के प्रहार से बचने का एक उपाय यह है कि मैं ब्रह्म का कवच धारण कर लूँ। ब्रह्म का कवच पहनते ही हृदय में धैर्य , आश्वासन और बड़े का सहारा प्राप्त कर लेने का सन्तोष जागृत होगा और जैसे सेनापति के साथ होने पर सैनिकों में उत्साह की लहरें हिलोरें मारती रहती हैं वैसे ही मेरे अन्दर संकटो से जूझने का उत्साह बना रहेगा। इन बाणों से आत्मा–रक्षा का दूसरा उपाय यह है कि मैं द्रष्टा आत्मा (कश्यप) की ज्योति और वर्चस्विता से अनुप्राणित हो जाऊँ। मेरे आत्मा में जो शक्ति निहित है, उसे पहचानूँ। आत्मा में जो अमरता की ज्योति जग रही है उसके दर्शन करुँ तथा इस भावना को अपने अन्दर जगाऊँ कि आत्मा अमर है, अतः संघर्षों से घबराना क्या! इस प्रकार ब्रह्म–कवच और कश्यप आत्मा की ज्योति से आच्छादित होकर मैं समस्त दैवी और मानुषी वाणों से आत्म–रक्षा में समर्थ हो सकता हूँ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने **'भगवान् की सच्ची प्रार्थना'** पर कथा सुनाते हुए कहा ईश्वर तुम्हारे हृदय की आवाज़ सुनता है। उसे शब्दों की आवश्यकता नहीं।" आनन्द–सिंधु, करुणा का सागर भगवान् हृदय के प्यार को देखता है। आपके हृदय में उसके लिए प्यार है तो वह मिलेगा अवश्य। **'प्रभु–भजन में तन्मयता'** पर कथा सुनाते हुए कहा कि प्रभु भजन करते हुए प्रभु–भजन में इस तरह लीन हो जाओ कि उसके अतिरिक्त पता ही न चले कि संसार में क्या हो रहा है । **'माँगना है जो कुछ खुदा से माँग'** पर कथा सुनाते हुए कहा कि अटल विश्वास जिसके हृदय में है, वही परमात्मा की उपासना का अधिकारी है। इसलिए जो माँगना है वह परमात्मा से माँगना चाहिए।

–आगे पढ़ेंगे दो लघु कथाएँ

स्वर में मिठास का रहस्य

अकबर के दरबार में एक गवैया था–तानसेन। कहते हैं, जब वह मल्हार गाता तो वर्षा होने लगती। जब वह दीपक राग गाना आरम्भ करता, तो दीये जल जाते।

एक दिन अकबर ने कहा–''तानसेन! यह सब–कुछ तुमने जिससे सीखा है, उसका गाना हमें भी सुनवाओ।''

तानसेन ने कहा–''बादशाह! मेरे गुरु स्वामी हरिदास हैं। आपके दरबार में वे नहीं आएँगे। मेरी तरह उन्हें आपसे कुछ लेना नहीं है। वे जंगल में रहते हैं, पत्तों की झोंपड़ी बनाकर। वहीं कहीं मौज आ जाए तो अपना दुतारा लेकर गाने लगते हैं। किसी के लिए वे गाते नहीं।''

अकबर ने कहा–''वह नहीं आ सकते, तो चलो हम उनके पास चलें। एक बार उनके दर्शन तो कर लें!''

बादशाह को साथ लेकर तानसेन उस जंगल में गए, जहाँ हरिदास स्वामी रहते थे। देखा–हरिदास कुटिया के बाहर ध्यान में मग्न हुए बैठे हैं, चुपचाप शान्त। एक दुतारा उनके पास पड़ा है, परन्तु वह भी बे–आवाज।

बादशाह ने धीरे से कहा–''तानसेन, यहाँ आकर भी क्या हम प्यासे जाएँगे? क्या कोई ऐसा उपाय नहीं कि स्वामी हरिदास जी गाने लगें?''

तानसेन ने कहा–''प्रयत्न करता हूँ शहंशाह! आप चुपचाप खड़े रहिए।''

और अपनी सितार उठाकर उसको बजाना शुरु कर दिया, थोड़ा ठीक बजाया, फिर जान–बूझकर गलत बजाने लगा। हरिदास ने सुना तो झुँझला उठे, बोले–''गलत बजाते हो तानसेन, सुनो!'' और अपना दुतारा उठाकर वह बजाने लगे। उसके साथ–साथ गाने लगे। जंगल का आकाश गूँज उठा। वृक्ष और पौधे झूम उठे। जंगल के हिरण स्वामी हरिदास के पास आकर खड़े हो गए। वहाँ के पक्षी शान्त हो गए। ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे चलती हुई हवा भी ठहर गई है।

बादशाह भी मस्त हो गए। कितनी देर हो गई, यह भी उन्हें पता नहीं लगा। अन्ततः जब हरिदास ने गाना बन्द किया तो बादशाह और तानसेन प्रणाम करके वापस आ गए। रास्ते–भर बादशाह बोल नहीं सके। मधुर संगीत की ध्वनि अभी तक उनके कानों में गूँज रही थी, उनकी आत्मा में गूँज रही थी। रात्रि के समय बादशाह ने तानसेन से कहा–''तुम अच्छा गाते हो, भारतवर्ष के सबसे बड़े गायक हो। फिर भी तुम्हारे गाने में वह रस क्यों नहीं, वह मस्ती क्यों नहीं, जो स्वामी हरिदास के गाने में हैं?''

तानसेन ने हाथ जोड़कर कहा–''बादशाह, मुझमें और हरिदास में बहुत अन्तर है। मैं हूँ एक शाही गवैया, और अपने बादशाह के लिए गाता हूँ। स्वामी हरिदास जगत्पति के गायक है; वे उसके लिए गाते हैं, जो करोड़ो बादशाहों को उत्पन्न और नष्ट कर देता है। जितना गुड़ हो उतना ही मीठा होता है। वे बड़े दरबार के गायक हैं, मैं छोटे दरबार का गायक हूँ।''

अकबर ने सुना, सोचा और चुप हो गया। धीरे–से उसने अपने मन में कहा–'जो भगवान् के गुण गाता है, उसकी वाणी में रस होगा ही।'

प्रभु जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं

एक राजा अपने मंत्री के साथ पर्यटन तथा शिकार के लिए जंगल में

शेष पृष्ठ 04 पर

वैदिक दृष्टिकोण में पर्यावरण संचेतना एवं संरक्षण

● डॉ. यतीन्द्र कुमार

पर्यावरण असन्तुलन को लेकर आज सम्पूर्ण विश्व में चिन्ता बनी हुई है तथा पर्यावरण संरक्षण वैश्विक चुनौती का विषय बनता जा रहा है। सभी जानते हैं कि पर्यावरण सन्तुलन पृथ्वी के अस्तित्व एवं प्राणी मात्र के कल्याण से जुड़ा हुआ मुद्दा है।

वैदिक ग्रन्थों में पर्यावरण के वृहद स्वरूप, उसके संरक्षण तथा चैतन्यता पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया है। इनमें पर्यावरण की प्रचलित संकल्पना के स्थान पर इसके सम्पूर्ण सचेतन एवं विषद स्वरूप का वर्णन है तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों की जिम्मेदारी भी तय की गई है।

पर्यावरण शब्द परि तथा आ उपसर्ग में प्र धातु से प्रत्यय लगाने पर बना है। जिसका अर्थ होता है चारों ओर का आवरण।

पर्यावरण के सार्थक व वृहद स्वरूप को लेने पर इसे तीन मुख्य भागों में विभक्त किया जा सकता है–

1. प्राकृतिक पर्यावरण
2. सामाजिक पर्यावरण तथा
3. सांस्कृतिक/वैचारिक पर्यावरण

पर्यावरण के ये तीनों ही अंग एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं तथा एक दूसरे पर पर्याप्त रूप से निर्भर भी हैं अतः पर्यावरण की शुचिता व समृद्धि के लिए इसके तीनों स्वरूपों को ही पूर्ण महत्त्व व संरक्षण दिए जाने की आवश्यकता है।

प्राकृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत काल आदि सात विषय अर्थात काल, दिशा, आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथ्वी आते हैं। सामाजिक पर्यावरण में मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक उसके समूह, संगठन, समितियाँ तथा सामाजिक रीतियाँ–नीतियाँ सम्मिलित हैं। और सांस्कृतिक पर्यावरण में जो कि मनुष्य द्वारा निर्मित है शिक्षा, मूल्य, नियम, कला व साहित्य जैसे विषय समाहित हैं।

पर्यावरण का संतुलन पृथ्वी के अस्तित्व व जीवन से सीधा जुड़ा हुआ है। इसलिए पृथ्वी की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए वैदिक ऋषियों ने प्राणी और पृथ्वी के सम्बन्ध को अत्यन्त संवेदनशील घोषित किया और कहा कि–

"माता भूमि पुत्रोऽहं पृथ्वियाम्" अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है और मैं और उसका पुत्र हूँ।"

इस संबंध के स्थापित हो जाने के बाद फिर भला प्रकृति के दोहन व असन्तुलन की कल्पना ही कहाँ बचती है।

प्रकृति माँ के सदृश उदार है तथा हमारी सभी आधारभूत सुविधाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। परन्तु माँ के समान ही हमारे द्वारा इससे आवश्यकता से अधिक लेने पर इसे चोरी मानते हुए यह हमें दण्डित भी करती है।

वैदिक काल में यद्यपि सृष्टि साम्यावस्था में थी–जीवनयापन की अनुकूलतम अवस्थाएँ थीं, या यों कहें कि तत्कालीन वातावरण पूर्ण व्यवस्थित था, और पर्यावरण प्रदूषण जैसी कोई समस्या नहीं थी। तथापि मानव स्वभाव को जानने वाले क्रान्तदर्शी ऋषियों ने पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के प्रति मानव को पहले से ही सचेत कर दिया था कि–

ईशावास्यं इदं सर्व यत् किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जिथाः मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।।

अर्थात् इस सारे जगत के कण–कण में ईश्वर (ईश्वर–जो इस सारे जग की संचालन शक्ति, ऊर्जा का रूप है) का वास है, अतः यहाँ इस संसार को त्यागते हुए भोगो, यानि उतना ही लो जितनी तुम्हें जीने के लिए आवश्यकता है, अनावश्यक को त्याग दो तथा किसी भी प्रकार के धन को, चाहे वह कितना ही आकर्षक या सुखपूर्ण क्यों न प्रतीत होता हो, लालच से मत देखो।

यदि हम वेदों का पर्यावलोकन करें तो इसमें यज्ञ पर विशेष बल दिया गया है। यजुर्वेद के प्रथम खण्ड के प्रथम अध्याय में कामना की गई है कि–

आदित्यै रास्नासि विष्णोर्वेष्योऽस्यूर्जे त्वाऽब्धेन त्वा चक्षुषाव पश्यामि।
अग्नेर्जिह्वा सि सुहूर्देवेभ्यो धाम्ने धाम्ने मे भव, यजुषे ।।30।।

अर्थात्–यज्ञ क्रिया! तू पृथ्वी निवासियों को कल्याणकारी मर्यादाओं में संचालित करने वाली है। यज्ञ की व्यापक शक्ति का तू साकार रूप है। पापों को जला डालने वाली अग्नि तेरी जिह्वा है। देवताओं को यहाँ बुलाने वाली क्रियाओं में तुम सर्वश्रेष्ठ हो, **हमारा घर–घर यज्ञमय हो।**

यज्ञ वृक्षों से सूखकर गिरी हुई लकड़ियों तथा गाय के घृत से किए जाने का प्रावधान है। निश्चित रूप से गिरी हुई सूखी लकड़ियाँ हमें पर्याप्त मात्रा में तभी प्राप्त होंगी जब विस्तृत क्षेत्र में वन हों तथा घृत भी हमें तभी मिलेगा जब पर्याप्त संख्या में गाय हों। इस दृष्टिकोण से देखें तो घर–घर में यज्ञ होने की कामना वन तथा पशुओं के सामंजस्य पूर्ण संवर्धन से जुड़ी हुई है। यज्ञ में डाली जाने वाली सामग्री भी जीवाणुओं को नष्ट करके वातावरण को शुद्ध एवं सुगंधित बनाने वाली है।

स्पष्ट होता है कि पुरुष द्वारा यज्ञ, यज्ञ हेतु घृत, घृत हेतु गाय, गाय हेतु वनस्पति, वनस्पति से वृष्टि, वृष्टि से वन, वन से यज्ञ। यह चक्र शाश्वत है।

वायुमण्डल के प्रदूषण को रोकने में वेद प्रतिपादित यज्ञों की महिमा प्रमाणित है। भोपाल गैस त्रासदी में उन स्थानों पर कम विनाश हुआ जहाँ यज्ञ होते थे।

यज्ञ, अन्न, जल, वायु, औषधि सभी के शोधन का मुख्य एवं सर्वोत्तम उपाय है। जिन ऋषियों ने यज्ञों को दैनिक कृत्य का अंग माना तथा वृक्ष लगाने को पुत्रोत्पादन जैसा पुण्य कर्म बताया वे निश्चित रूप से ज्ञानी एवं दूरदर्शी थे।

इसके साथ ही वैचारिक प्रदूषण सर्वविध प्रदूषण का मूल है और वह प्राकृतिक प्रदूषण से भी कहीं अधिक भयावह है क्योंकि पर्यावरण प्रदूषण से भी पहले लोभ द्वारा हमारी बुद्धि और विचार ही प्रदूषित होते हैं। लोगों के लोभ के कारण जब पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है तो हम सर्वविनाश को देखते हुए भी वैचारिक प्रदूषण के कारण ही निज स्वार्थ को ही महत्व देते हैं ओर जिस डाल पर बैठे हों उसी को काटने वाले व्यक्ति की तरह प्रकृति के प्रदूषण को रोकने के लिए उद्यत नहीं होते। शायद इसीलिए वैदिक ऋषियों ने **"पावकाः न सरस्वती वाजभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः"** इत्यादि मन्त्रों में विद्या और बुद्धि की देवी सरस्वती को सर्वप्रथम पवित्र करने वाला स्वीकार किया है। बुद्धि की पवित्रता के बिना तो पर्यावरण के किसी अंग की भी पवित्रता सुरक्षित नहीं रह सकती।

लोभ, मोह, क्रोध, ईर्ष्या, मद, मात्सर्य आदि विकारों ने मानव बुद्धि को विकृत कर दिया जिसके फलस्वरूप वैदिक काल में प्रकृति की पूजा करने वाला मानव उस पर विजय पाने की इच्छा करने लगा। फलस्वरूप हमारे तथाकथित विकास ने ओजोन परत का क्षरण करके सर्वनाश को निमंत्रण दिया है। वैदिक ऋषियों ने बुद्धि को प्रदूषण से बचाकर रखने वाली देवी सरस्वती को सर्वप्रथम पावक–पवित्र करने वाली के स्वरूप में पहचाना था।

उपरोक्त सांस्कृतिक/वैचारिक प्रदूषण के बाद दूसरे स्थान पर है, सामाजिक पर्यावरण जिसमें यह ध्यान रखे जाने की आवश्यकता है कि क्या हमारा समाज पर्यावरण प्रदूषण के प्रति पूरी तरह से जागरूक है? कहीं हमारे सामाजिक समारोह, रीति–रिवाज, नदियों और वायुमण्डल के प्रदूषण का कारण तो नहीं हैं?

वेदों में दान की महिमा का भी वर्णन है। दान वास्तव में सामाजिक समरसता का सोपान है। जिसके पास अधिक है वह देने के किसी अभिमान के बिना उसे दे जिसके पास नहीं है। आधुनिक पूँजीवाद अधिक से अधिक जमा करके पूँजीपति बनने में विश्वास रखता है जिससे अंततः समाज का एक बड़ा वर्ग गरीब रह जाता है। ऐसे गरीब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों, वनों का दोहन करते हैं, पशुओं के गोबर को ईंधन के रूप में जलाते हैं। न उनके पास शिक्षित और पर्यावरण के प्रति जागरूक होने के लिए धन है और न ही घर में शौचालयों और नालियाँ बनवाने के लिए पैसा, वे खुले में शौच, और मार्गों पर दूषित जल फैलाने के लिए विवश हैं। ऐसे लोगों का उन्नयन केवल सरकारी सहायता से संभव नहीं है इसके लिए सम्पूर्ण समाज को अपना दायित्व समझकर आगे आना होगा।

वैचारिक और सामाजिक रूप से प्रदूषण मुक्त होने के बाद ही पर्यावरण प्रदूषण को प्रभावी रूप से रोका जा सकेगा।

वेद सदन, महादेव स्ट्रीट, मण्डी,
धनौरा–244231, जनपद–अमरोहा (उ.प्र.)
चलभाष–9412634672

क्रांतिकारी पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

● **चिरंजी लाल प्रजापति**

महर्षि दयानन्द के शिष्य क्रांतिकारी पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा मांडवी नगर गुजरात में करसन जी भणशाली के घर सन् 1857 में जन्मे थे। भुज में प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात वर्मा जी उच्च शिक्षा के लिए अपने पिताजी के पास बम्बई आ गए। यहाँ वर्मा जी ने अन्य शिक्षा के साथ संस्कृत, व्याकरण–साहित्य में प्रवीणता प्राप्त कर ली। बम्बई के एक सेठ छवीलदास ने श्यामजी कृष्ण की योग्यता और प्रतिभा से प्रभावित होकर अपनी बेटी भानुमति को उनसे सन् 1875 में ब्याह दिया।

इन्हीं दिनों बम्बई में स्वामी दयानन्द जी का आगमन हुआ जब वर्मा जी स्वामी जी के सम्पर्क में आए और स्वामी जी से प्रभावित हो उनके अनन्यभक्त बन गए। स्वामी दयानन्द जी ने वर्मा जी को संस्कृत को बढ़ावा देने और राष्ट्र हित में कार्य करने का संकल्प दिलाया। स्वामीजी के अनुसार वर्मा जी आर्य समाज का कार्य करने लगे। सन् 1877 में स्वामी जी द्वारा वेदक्षष्य के प्रकाशन का कार्य वर्म जी करते रहे।

बम्बई के आक्सफोर्ड विद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर मोनिय विलियम्स ने वर्मा जी की विलक्षण प्रतिभा कोपहचान कर इनको इंग्लैण्ड जाकर उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। सन् 1879 में श्यामजी कृष्ण वर्मा इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ जाकर वर्मा जी ने ऑक्सफोर्ड विद्यालय में संस्कृत के अध्यापक लग गए और अपनी पढ़ाई करने लगे। यहाँ बैरिस्ट्री पास कर बार एट लॉ हो गए। वर्मा जी का स्वामी दयानन्द जी से पत्र–व्यवहार होता रहता था।

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा सन् 1885 में बैरिस्टर बनकर भारत आ गए और बम्बई की अदालत में यहाँ की अनेक देशी रियासतों की ओर से वकालत करते थे। वर्मा जी ने रतलाम, उदयपुर, जूनागढ़ आदि की रियासतों की व्यवस्था मंडल में भी कार्य किया परन्तु यह उनकी कार्य प्रणाली से सनतुष्ट नहीं थे। अतः सन् 1897 में पुनः इंगलैण्ड चले गए। यहाँ आकर इन्होंने अपने उद्योग से अच्छा धनोपार्जन किया और उसे देशहित में लगया इंगलैण्ड में रहते हुए वर्मा जी भारत की राजीनति पर बड़ी पैनी नजर रखते थे।

यहाँ से इन्होंने भारत को आज़ाद कराने की मुहिम चलाई। वर्मा जी ने एक इण्डियन होम रूल सोसाइटी की स्थापना की इसमें बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी नौजवान इकट्ठे होने लगे वर्मा जी इन नौजवानों से कहते कि... ठीक है हम यहाँ आने रोजगार की दृष्टि यानि की अपने कार्य के लिए आए हैं, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम पर भी अपने भारत देश को आज़ाद कराने की ज़िम्मेदारी है। वर्मा जी ने राष्ट्रीय विचारधारा और देश के नागरिकों में अपने देश भारत को आज़ाद कराने की जनचेतना के लिए इण्डियन सोशियालोजिस्ट पत्र निकाला जिसमें क्रांतिकारी विचार छपते थे। इस मुहिम में लाला हरदयाल, चम्पक रमण पिल्लई, मैडम कामा, सरदार रणसिंह, करतारसिंह सराभा, तारक नाथ दास, भाई परमानन्द वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय आदि क्रांतिकारी वर्मा जी के अनुयायी बन चुके थे।

इन दिनों कांग्रेस दो भागों में बँटी हुई थी एक नरम दल और एक गरमदल। पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा जी की सहानुभूति दादा भाई नौरोजी और गोपाल कृष्ण गोखले की अपेक्षा गरमदल के नेता लोकमान्य तिलक की विचारधारा के पक्षपाती थे। वर्मा जी का तिलक जी से देश की राजनीति पर पत्राचार होता रहता था। वर्मा जी ने इंग्लैण्ड में एक इण्डिया हाऊस भी बनाया हुआ था जिसमें भारत से आकर विद्यार्थियों के लिए रहने के लिए सभी सुख–सुविधाएँ उपलब्ध थी। सोशियालोजिस्ट पत्र के द्वारा भारत में जब दामोदर सावरकर को यह मालूम हुआ कि वर्मा जी भारतीय छात्रों को पढ़ने के लिए छात्र वृत्ति देते हैं। तो सावरकर तुरंत तिलक जी से मिले और उनसे इंग्लैंड में पढ़ने के लिए अपनी इच्छा जाहिर की। तिलक जी ने श्यामजी कृष्ण वर्मा को पत्र लिखा कि इस होनहार नौजवान को स्वामी दयानन्द छात्रवत्ति प्रदान करें। सावरकर वर्मा जी के पास इंग्लैण्ड चले गऐ अन्य क्रांतिकारी जो गोपनीयता से कार्य कर रहे थे वे भी सामने आ गए वर्मा जी ने इन नोजवानों में शिक्षा के साथ–साथ देश के लिए क्रांति की चेतना भर दी परिणामस्वरूप सन् 1909 में मदनलाल ढींगरा द्वारा कर्जन वायली मारा गया। वर्मा जी ने इण्डिया हाऊस की जो स्थापना की हुई थी उसका भार अब सावरकर को सौंप दिया।

अंग्रेज़ों ने सन् 1907 में सन् 1857 की जयन्ती मनाई तो यह वर्मा जी को बर्दाश्त न हुआ और उन्होंने अपने पत्र में इसका विरोध किया। अंग्रेज़ों द्वारा वर्मा जी पर पुलिस का नियंत्रण रखा जाने लगा इससे वर्मा जी को भारत को स्वतंत्र कराने की क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रकाशित करने में बाधाएँ उत्पन्न होने लगी तभी वे फ्रांस की राजधानी पेरिस आ गए। महायुद्ध के समय फ्रांस में भी आपको काम में दिक्कत हुई तो स्विटज़लैण्ड के जेनेवा नगर में आ गए। भारत में जब लोकमान्य तिलक जी जेल से रिहा हुए तो वर्मा जी ने इनकी प्रशंसा में क्रांतिकारी लेख लिख जिससे क्रांतिकारियों को प्रोत्साहन और जनता में क्रांतिकारियों के प्रति विश्वास उत्पन्न हुआ इन्हीं दिनों भारत की राजनीति में मोड़ आया कि गांधी जी द्वारा चलाए जा रहे असहयोग और शांति आन्दोलनों से जनता आकर्षित हुई और क्रांति आंदोलनों पर प्रश्न चिह्न लगने लगे। पं श्यामजी कृष्ण वर्मा अब वृद्धावस्था की सीमा में आ चुके थे, इन्होंने अपनी सभी सामाजिक, राजनैतिक जिम्मेदारियाँ अपने साथी कार्यकर्ताओं को सौंप दी। इनका स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगा। 31 मई सन् 1930 में आपने देश का कार्य करते हुए अपने प्राणों को भगवान के चरणों में समर्पित कर दिया।

सी 219 न्यू रणजीत नगर नई दिल्ली–8
मो. 9582083171

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

बोध कथाएँ...

निकल गया। चलते–चलते काँटोंवाली झाड़ी में राजा का वस्त्र उलझ गया। हाथ से वस्त्र को बचाने का यत्न किया, तो उँगली में बड़ा घाव आ गया। रक्त बहने लगा–वज़ीर ने पटटी बाँधते हुए कहा–''कोई बात नहीं, प्रभुं जो करते हैं अच्छा ही करते हैं।''

यह बात सुनकर राजा को क्रोध आ गया–अरे! मेरी तो उँगली कट गई, इतना रक्त बह गया, पीड़ा तंग कर रही है, और यह कैसा मंत्री है जो कह रहा है कि प्रभु जो करता है, अच्छा करता है? मैं तो ऐसे मंत्री के बिना ही अच्छा हूँ।

''मंत्री, आप कृपया जाइए। मैं ऐसे साथ से अकेला ही अच्छा।'' मंत्री ने उत्तर में कहा–''जो आज्ञा आपकी, मैं अपना रास्ता लेता हूँ।''

राजा अकेला ही चल पड़ा। चलते–चलते राजा दूसरे राजा के राज्य में जा पहुँचा। वहाँ उस दिन देवी पर मनुष्यों की बलि चढ़ाई जाने वाली थी। सिपाही किसी पुरुष की तलाश में थे। खोजते–खोजते सिपाहियों की दृष्टि राजा पर पड़ी–सुन्दर है, शरीर अच्छा है, देवी इसकी बलि से बहुत प्रसन्न होगी। राजा को सिपाही मन्दिर में ले गए।

बलि चढ़ाने से पूर्व जब राजा को स्नान कराया जाने लगा, तो पुजारी की आँखों ने राजा की कटी उँगली को देखा और पुकार उठा–''अरे! यह तो अंग–भंग है! इसकी बलि नहीं चढ़ाई जा सकती।''

राजा को छोड़ दिया गया। राजा अपनी नगरी की ओर आ रहा था। विचार भी कर रहा था कि मंत्री ने ठीक ही तो कहा था कि प्रभु जो करते हैं, हमारे कल्याण के लिए ही करते हैं। यदि हाथ पर घाव न आ गया होता तो आज यमदूत ले ही गए थे। इस घाव ने ही बचा लिया। ऐसे मंत्री का तो मान होना चाहिए, न कि उसे दण्ड मिलना चाहिए। नगरी में पहुँचने से पूर्व राजा मंत्री की खोज करने लगे। वहाँ एक नन्ही–सी कुटिया में मंत्री को बैठे देखा तो उसे अपने साथ लेकर राजा अपनी नगरी में जा पहुँचा।

राजा ने मंत्री से कहा–''आपने तो मेरी उँगली कटने पर बड़े पते की और मर्म की बात कही थी। मैं ही अल्प–बुद्धि समझ न पाया। इसी घाव के कारण मैं मौत के मुँह से निकल आया हूँ, परन्तु मैंने आप–जैसे तत्त्वदर्शी का जो अपमान किया और आपको निकाल दिया, इसमें प्रभु ने आपकी कौन–सी भलाई देखी?''

मंत्री ने मुस्कराते हुए कहा–''यह तो और भी अधिक अच्छा हुआ। यदि आप मुझे दुत्कार न देते, तो मैंने आपके साथ ही रहना था। तब सिपाही मुझे भी पकड़कर ले जाते। आप तो घायल होने के कारण छूट जाते, परन्तु मैं तो अंग–भंग नहीं था। तब वह मेरी ही बलि चढ़ा देते। मेरे ऊपर तो प्रभु ने विशेष कृपा की कि ज़ख्मी भी न किया और मृत्यु का ग्रास बनने से भी बचा लिया, इसीलिए यही कहना उचित है कि प्रभु जो करते हैं, हमारे कल्याण के ही लिए करते हैं। राजन्! हमारी दृष्टि छोटी है, प्रभु की आँखें बहुत दूर तक देखती हैं।''

तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।

–क्रमशः

स्वार्थ को सच बनाने का संघर्ष : विनाश को बुलावा

● राम निवास 'गुण ग्राहक'

मनुष्य के स्वभाव का कड़वा दोगलापन देखना हो तो एक काम करके देखो। किसी भी व्यक्ति को पकड़कर उससे कहो कि तुम अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार सामान्य ढंग से काम करो तो एक माह में कितना काम कर सकते हो? वहीं दूसरी ओर उससे कहो कि तुम्हें सामान्य ढंग से जीवन जीने के लिए एक महीने में जीवन निर्वाह कर क्या–क्या वस्तुएँ कितनी–कितनी मात्रा में चाहिएँ। निश्चित रूप से आपको जो उत्तर मिलेगा उसमें कार्य की मात्रा आधी और जीवन निर्वाह की वस्तुओं की मात्रा कम से कम दोगुनी तो अवश्य होगी। आज के मानव की सोच का घटियापन यहाँ तक पहुँच गया है कि अगर बिना कुछ काम किए उसे जीवन भर खाने पीने की सुविधा दी जाए तो वह एक तिनका उठाकर इधर से उधर रखने तक को तैयार न हो। थोड़ा काम करके अधिक पाने की इच्छा तो हम सबके में सामान्यतः रहती ही है, लेकिन आज ऐसे मिट्टी के माधो भी आपको बिना ढूँढे मिल जाएँगे जो बिना कुछ भी किए सबकुछ पा लेने को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हों। जितना परिश्रम किया है उसका उतना ही प्रतिफल न्यायपूर्वक मिल जाए ऐसी सोच रखने वाले लोगों को ढूँढना आज भूसे के ढेर में सुई ढूँढने जैसा ही कठिन है। इससे आगे बढ़कर जितना परिश्रम किया है उसका उतना ही न्यायपूर्वक और उससे किसी दूसरे का भी जीवन यापन हो जाए अर्थात् अपने श्रम से प्राप्त संसाधनों में से दूसरे के लिए भी कुछ देने की भावना जिनके हृदय में हो ऐसे सच्चे मानव के दर्शन का पुण्य आज किसी को मिल जाए तो वह स्वयं को भगवान माने। जो मनुष्य अपने श्रम से प्राप्त न्यायपूर्वक धन में से भी दूसरों को देने की भावना रखता है, सच्चे अर्थों में वह देवता है। जो अपने श्रम से न्यायपूर्वक प्राप्त धन से अपना जीवन निर्वाह कर ले वह सच्चे अर्थों में मनुष्य है। जो श्रम से अधिक प्राप्ति में लगा रहता है वह राक्षस है। और जो बिना किए ही सब कुछ पा लेने की भावना से ग्रस्त है उसे राक्षसों का भी बड़ा भाई अर्थात् पिशाच या निशाचर कहते हैं।

मैंने मनुष्य के रूप में विचरण करने वाले प्राणी का उसके विचारों व भावों के अनुसार जो वर्गीकरण किया है, वह मेरा अपना नहीं है। हमारे धर्म शास्त्रों व नीतिग्रन्थों में मनुष्यों का ऐसा ही वर्गीकरण व नामकरण देखने को मिलता है। इस धरती तल पर ऐसा कोई समझदार या बुद्धिमान मनुष्य है जो कम श्रम करके अधिक प्राप्ति या कुछ न करके भी बहुत कुछ पाने की लालसा रखने वाले को अच्छा मानता हो? अपने श्रम का न्यायपूर्वक फल पाने की इच्छा को और उससे कम में अपना काम चला लेने की भावना को कोई बुरा कह सकता है? यदि इन दोनों प्रश्नों का उत्तर कोई नहीं दे सकता तो वह अपनी गिनती इनमें से किस प्रकार के लोगों में करना–कराना चाहता है, इसका उत्तर वह स्वयं से पूछे। निश्चित रूप से ऐसी स्थिति में हम स्वयं को सहज नहीं पाते क्योंकि मनुष्य का बेईमान मन कम श्रम से अधिक पा लेने या बिना कुछ किए बहुत कुछ समेट लेने की स्वार्थ ग्रंथि से ग्रसित होकर भी सबको दिखाना यही चाहता है कि सवह अपने श्रम का न्यायपूर्वक फल चाहता है कुछ चतुर सुजान तो ऐसे भी हैं जो बिना कुछ किए सबकुछ पा लेने की भावना से ग्रस्त होकर समाज को यह दिखाने का ढोंग करते हैं कि उनका तन मन धन तो लोक कल्याण के लिए है। ऐसे लोगों का आज एक अच्छा खासा वर्ग है तथा उनका समाज में बहुत सम्मान भी है। यह बड़ा दुःखद है, दुर्भाग्य का सूचक है कि कुछ न करके बहुत कुछ पा लने की तिकड़म भिड़ाने वाले लोग हमारे युवा पीढ़ी के आदर्श बनते जा रहे हैं। परिश्रम करके कुछ पाना आज पिछड़ापन जैसा लगता है, पिडड़ेपन से मुक्त होना ही आधुनिकता का चिह्न है। मनुष्य जितना आधुनिक बन रहा है उतना ही कम श्रम से अधिक पाने की भावना का बड़प्पन मानने लगा है। आधुनिक बड़प्पन की यह भावना इसी गति से बढ़ती रही तो मानवता इसका भार नहीं उठा पाएगी। जिसके मन–मस्तिष्क में यह बड़प्पन जितना बढ़ जाता है उसे व्यक्ति के जीवन और व्यहार से मानवता उतनी ही बोनी होती जाती है। ऐसा क्यों होता है, इसका मानोविज्ञान समझें।

एक व्यक्ति कम श्रम से अधिक लाभ या बिना श्रम के ही बहुत कुछ या सब कुछ पा लेना चाहता है, निश्चित रूप से वह किसी न किसी तरह से किन्हीं दूसरों का शोषण कर रहा होता है। मैं सौ रुपए का श्रम करके दो सौ रुपए पाना चाहता हूँ तो इसका सीधा अर्थ है कि किसी ने दो सौ रुपए का श्रम किया होगा और उसे सौ रुपए मिले होंगे, तब जाकर उसके शेष सौ रुपए मुझे मिले हैं। अगर किसी ने दो सौ कमाकर सौ में संतोष न किया होता तो किसी के पास मेरे सौ के बदले मुझे देने के लिए दो सौ होते ही नहीं। प्रकृति कभी ऐसा नहीं करती कि कोई सौ का काम करे उसे दो सौ मिल जाएँ, यह प्राकृतिक न्याय नहीं है कोई ऐसा करता है तो प्रकृति अपने ढंग से उसका न्याय अवश्य करती है। यहाँ एक बात स्पष्ट कर देनी आवश्यक है, वह यह कि किसी कारखाने के बड़े अधिकारी को अधिक वेतन मिलता है और छोटे कर्मचारी या चौकीदार को कम तो यह मानवीय श्रम और उत्तरदायित्व से जुड़ी हुई क्षमताओं का उचित सन्तुलन कहा जाता है। हाँ इसमें अतिरेक नहीं होना चाहिए। किसी कारखाने या उत्पादक संस्थानों के छोटे से छोटे कर्मचारी को उतना अवश्य दिया जाना चाहिए जिसमें वह अपने परिवार का भलीभाँति ससम्मान पालन–पोषण कर सके। इसी प्रकार बड़े से बड़े अधिकारी उतने का अधिकारी नहीं है कि वह श्रम का भी अवमूल्यन करने तक विलासिता का शिकार हो जाए। न्यूनतम की तरह उच्चतम का भी ध्यान रखना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को किसी भी रूप में करोड़ों–अरबों की मासिक आय किसी भी दृष्टि में उचित नहीं कही जा सकती। ऐसी व्यवस्था किसी न किसी रूप में अव्यवस्था व अन्याय की दिशा में ही ले जाती है। सामाजिक व राष्ट्रीय स्तर पर अव्यवस्था और अन्याय कालान्तर में आक्रोश का रूप धारण करके विनाशकारी ही सिद्ध होती है। मगर हम तो वैयक्तिक चिंतन या मनोदशा को लेकर चर्चा करने चले थे, चलते–चलते आ पहुँचे सामाजिक स्तर पर। वैयक्तिक चिन्तन ही जब अधिसंख्यक लोगों के मन–मस्तिष्क पर अंकुरित होकर पुष्पित पल्लवित होता हुआ व्यवहार के धरातल पर जाता है तो सामाजिक व्यवस्थाओं का रूप धारण कर लेता है। झूठे और दोगले हैं वे लोग जो किसी भी व्यक्ति के जीवन को निजी व सार्वजनिक कह कर किन्हीं लोगों के पापों को कम करने या छिपाने का प्रयास करते हैं। वस्तुतः हम अभी वैयक्तिक प्रवृत्तियों को लेकर ही अपनी बात को आगे बढ़ाना चाहते हैं।

कम श्रम का अधिक लाभ लेने की भावनाएँ और योजनाएँ शोषण को बढ़ावा देने वाली हैं, क्योंकि श्रम से अधिक कोई कहीं लेता है तो स्वतः सिद्ध है कि वह किसी दूसरे का श्रमफल है। दूसरी ओर जो मनुष्य अपने श्रम के न्याययुक्त फल से सन्तुष्ट हैं, वह मानवीय गुणों की दृष्टि से अच्छा माना जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि यह एक सामान्य मानवीय गुण है, इसे मानवता के पैमाने का आधार कहा जा सकता है। एक सच्चे और अच्छे मानव को चाहिए कि वह अपने मानवीय गुणों का विकास करके देवता बनने की ओर अग्रसर हो। देवत्व देने से आता है, इसलिए जो व्यक्ति अपने न्याय अर्जित धन संसाधनों में से दूसरे अभाव ग्रस्त व्यक्तियों या जीव जन्तुओं के लिए जितना अधिक देता है, वह उतना ही अधिक देवता बनता है। वह संसार में पोषण का प्रतिनिधि होता है न कि शोषण का। आज का मनुष्य देने का आनन्द भूल गया है, वह लेने में सुख मानने लगा है। कुछ लोग जो आपको देते हुए दिखते हैं वस्तुतः वे अपनी उदारता के करण नहीं दे रहे, बल्कि वे अपनी सामाजिक छवि चमकाने के लिए या सीधे सपाट शब्दों में कहें तो अपनी शोषक प्रवृत्ति को उदारता का मुखौटा पहना रहे होते हैं। किसी ने परदे के पीछे एक लाख का शोषण करके सार्वजनिक रूप से दस हजार का दान करके पुण्य कमाया या पाप छिपाया है, यह उससे अच्छा कौन जानता होगा?

मनुष्य की एक दोगली सोच पर विचार करने की और आवश्यकता है। वह सोच है सत्य को स्वीकारने की सोच। मनुष्य ने सच को भी बहुरूपता मान लिया है, सच के प्रति उसके मापदंड बदलते रहते हैं। घर वाला सच दुकान या उसके अपने कार्यस्थल पर काम नहीं आता। अपने अंतरंग मित्रों में बैठकर वह जो सच स्वीकार कर लेता है, सार्वजनिक मंच पर आकर उसका वह रूप बदल जाता है। अपने कार्यालय में चाय की चुस्कियों के साथ गप्पें मारना जिसका जन्मसिद्ध अधिकार है, वही जब अपने किसी काम से दूसरे किसी कार्यालय में जाकर किसी को ऐसा करता देखे तो उसे लगता देश में निठल्लापन और हरामखोरी सीमा पार कर चुकी है। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए सच का स्वरूप बदलने की कला में निपुण होता जा रहा मानव नहीं देख पा रहा कि सच तेरा मेरा या उसका नहीं होता। सच को मैं अपने अनुरूप नहीं ढाल सकता, मुझे स्वयं को सच के अनुरूप ढालना होगा। सच मेरा संरक्षक है सेवक नहीं जो मेरे कहे अनुसार करे। सत्य पर चलकर सुख और स्वार्थ ढूँढने के स्थान पर आज का कायर मनुष्य अपने सांसारिक सुख और स्वार्थ की पूर्ति को ही अन्तिम सत्य मान बैठा है। जिस किसी के पास थोड़ी सी शक्ति आ जाती है तो वह सबसे पहले सत्य पर ही उसका प्रहार करता है। सच की अनदेखी करके झूठ पर सचका आवरण चढ़ाकर छोटी–मोटी सफलताएँ पा जाने वाला मनुष्य अपने अंदर जड़ें जमाने वाली व्याकुलता, अशान्ति और अकुलाहट की ओर ध्यान नहीं दे पाता जो धीरे–धीरे उसके जीवन को खोखला कर डालती हैं। पता नहीं क्यों आज लोगों को सच बोलना और सुनना घाटे का सौदा लगता है। मनुष्य के साथ भी कैसी विचित्र विडम्बना है कि वह सत्य से दूर भी नहीं भाग सकता। वह सत्य को पूरी तरह त्याग भी नहीं सकता और सत्य को स्वीकार भी नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति में वह सच को हृदय के किसी कोने में दबाकर झूठ को सत्य का मुखौटा पहनाकर प्रस्तुत करता है। उसका हृदय जानता है कि वह झूठ है, मगर

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

मिथ्या धारणाओं से घृणा

● धर्मवीर, एम.ए.

भाई परमानंद आर्यसमाज की चर्चा सुनते थे। आर्यसमाज ने खंडन–मंडन की छोटी–मोटी पुस्तिकाएँ छपवाई थीं। ये भी चकवाल स्कूल में पहुँच गई। समाचार–पत्र तो उस समय पंजाब में नाम को ही थे। पुस्तिकाओं के द्वारा ही आर्यसमाज की विचारधारा फैलाई जा रही थी। इतने में भाई परमानंद के जीवन में एक घटना हुई, जिससे उनके विचारों ने एक दिशा स्वीकार की।

एक दिन स्कूल से वापस घर पहुँचते ही परमानंद को प्रतीत हुआ कि उन्हें ज्वर हो रहा है। गाँव के बुद्ध हकीम ने देखकर कहा, "इसे छेड़ना अच्छा नहीं। रोगी को बिस्तर में पड़ा रहने दो।" यह टाइफाइड ज्वर या तपे–मोहरका था। इक्कीस दिन तक खाने के लिए कुछ न दिया गया। तीसरा सप्ताह बहुत नाजुक था। घरवाले हर समय यही समझते कि बस अब प्राण निकले। इसी में सप्ताह निकल गया। इक्कीसवें दिन बीमार की आँख खुली। हिलने–डुलने की शक्ति जाती रही थी। शरीर हड्डियों का पंजर रह गया था। तो भी रोगी अच्छा होने लगा। उधर बहन का जन्म हुआ तो माता सख्त बीमार हो गई। दो ही दिन में रोग इतना बढ़ा कि माता के बचने की आशा न रही। कोई उपाय कारगर न सिद्ध हुआ। वे संसार से चल दीं।

माँ को लोग श्मशान की ओर ले जा रहे थे। उस समय भाई परमानंद ने कुछ साहस अनुभव किया। वे भी अर्थी के साथ हो लिए। थोड़ी दूर जाकर निर्बलता के कारण बेहोश हो गए। कुछ लोग उन्हें उठाकर घर वापस ले आए। उनके शरीर की यह अवस्था थी, परन्तु गाँव के पंडित थे कि प्रतिदिन प्रातःसायं उनसे मरने के सम्बन्ध में रस्में पूरी करवाते। चौथा हुआ। ग्यारहवाँ भी बीता। गरुड़ पुराण की कथा हुई। सत्रहवें दिन की रस्में दोपहर तक होती रहीं। इन रीतियों के करने में भाई जी को ऐसे शारीरिक श्रम में से गुजरना पड़ा कि उन्हें इनसे घृणा हो गई। अब तो उनके मन में हर समय आर्यसमाज के विचार घूमने लगे।

भाई जी के लिए ये दिन मृत्यु से बचकर नए जीवन के आरंभ के तो थे ही। इससे बढ़कर उनके अंदर नया धार्मिक जीवन उत्पन्न हो गया। इस छोटी आयु में वे पक्के आर्यसमाजी बन गए। स्कूल में वापस जाकर उन्हें दिन–रात आर्यसमाज की बातों ही का ध्यान रहता। चकवाल में उन्होंने आर्यसमाज स्थापित किया। उनके वोर्डिंग हाउस, स्कूल और सारे चकवाल में लोग धार्मिक वाद–विवाद में मगन रहने लगे। भाई जी के अंदर यह विचार उग्रता से काम करने लगा कि आर्यसमाज के विचारों का प्रचार ही हिन्दू–समाज को बचा सकता है। इसलिए भाई जी लिखते हैं: "मैंने निश्चय कर लिया कि मुझे अपना जीवन आर्यसमाज के अर्पण करना चाहिए। इस छोटी आयु में पता लगा कि लाला हंसराज ने अपना जीवन लाहौर के दयानन्द कॉलेज को दे दिया है। मैंने उनसे पत्र–व्यवहार आरंभ कर दिया।"

आर्यसमाज की चर्चा की देखा–देखी पंजाब में कई प्रकार के प्रवर्तकों ने नए मत जारी कर दिए। संभव है, हर युग में ऐसे प्रवर्तक जन्म लेते रहते हों परन्तु धार्मिक जिज्ञासा के इस युग में तो कई मत खड़े हो गए। साधुओं में कई ठगनेवाले पैदा हो गए। मुसलमानों के अंदर कादियाँ के मिर्जा गुलाम अहमद ने अपनी पैगंबरी का दावा किया। ब्रह्मसमाज के बाबू केशवचंद्र सेन का अनुकरण करते हुए एक व्यक्ति ने अपना समाज चलाया। मुज़फ्फ़रगढ़ में हेमराज अपने–आपको ब्रह्म कहकर लोगों से पूजा करवाने लगा। सिखों में भी एक नया मत उत्पन्न हुआ। चेतराम ने जूते की पूजा जारी करके चेतरामियाँ पंथ चलाया। जो उठता, अपना पंथ बना बैठता।

तब एक कहानी का बहुत प्रचार हुआ। मध्य भारत के एक गाँव में जाकर एक साधु रहने लगा। मंदिर में उसने डेरा लगा दिया। लोग उसके पास आकर हुक्का–तंबाकू पीते। एक दिन बहुत–से–आदमी बैठे थे कि परदेशी आया। जब वह हुक्के की चिलम भरने के लिए उठा तब साधु ने कहा, "क्या आपके पास कोई पैसा है?" उसने जेब से एक पैसा निकालकर दे दिया। साधु ने वह पैसा चिलम में रखकर तंबाकू के ऊपर कुछ राख डाल दी। तंबाकू जल गया। अब चिलम खाली की गई तो पैसा के बजाय सोने की अशर्फी निकल आई। वह अशर्फी साधु ने उस परदेशी को दे दी। बस, सारे गाँव और इर्द–गिर्द के प्रदेश में यह बात प्रसिद्ध हो गई कि साधु कीमियागर है। उसका मान बढ़ने लगा।

कुछ समय बीत गया। एक दिन उसी गाँव में फटे–पुराने कपड़े पहने एक ब्राह्मण आ निकला। वह आते ही साधु से कहने लगा, "महाराज, आपका नाम सुनकर दूर से आया हूँ। लड़की जवान हो गई है। उसका ब्याह करना है। मेरे पास कुछ है नहीं। आप ही उसके लिए कुछ प्रबन्ध करें।"

"जाओ, जाओ।" क्रोध प्रकट करते हुए साधु ने कहा, "किसी धनवान से रुपया माँगो। मेरे पास क्या रखा है?" ब्राह्मण जिद करके वहाँ खड़ा रहा। आस–पास के भक्तों ने साधु से कहा, "महाराज, निर्धन ब्राह्मण की लड़की का ब्याह करवा देने से बहुत पुण्य होता है। इसलिए आप कृपा करके इसके लिए कुछ प्रबंध कर ही दें।"

साधु ने अपने सिराहने के नीचे हाथ डाला तो वहाँ से एक आम निकाला। लोग चकित रह गए। फिर न वह आमों का मौसम था, न आमों का स्थान।

अब साधु ने ब्राह्मण से कहा, "राजा के बाग में जाओ, वहाँ जहाँ कहीं तुम्हारे हाथ से यह आम गिरे, वहाँ भूमि खोदना।" बहुत से लोग ब्राह्मण के साथ हो लिए। राजा के बाग में वह आम उसके हाथ से एक स्थान पर गिर पड़ा। जमीन खोदने पर वहाँ से मिट्टी का एक बर्तन निकला। उसमें बहुत–सी अशर्फियाँ थीं। बर्तन लेकर ब्राह्मण साधु का कोटि–कोटि धन्यवाद करते हुए अपने घर चला गया।

साधु की ख्याति की सीमा न रही। ज्यों–ज्यों दिन गुजरने लगे, त्यों–त्यों उसका नाम फैलने लगा। उसी गाँव में एक स्त्री–पुरुष रहते थे। उनका छोटा–सा लड़का बीमार हो गया। खबर फैली कि वह मरने वाला है। लोग एकत्र हो गए। लड़का मर गया। माँ रोने–पीटने लगी। एक आदमी बोल उठा, "इसे उन महात्मा के पास ले चलो। वे शायद इसे जीवन–दान दे दें।" तरह–तरह की बातें होने लगी। अंत में मुर्दे को उठाकर माँ उस साधु के पास ले गई। माँ ने मुर्दे को साधु के चरणों में रख दिया।

"उठाओ इसे यहाँ से!" क्रोध से भरा साधु चिल्लाया, "मैं क्या कर सकता हूँ? यह काम ईश्वर के हाथ में है, मेरे हाथ में नहीं।"

इस बीच हजारों लोग जमा हो गए। कई एक ने प्रार्थना की। अंत में साधु कुछ–कुछ सहमत हो गया। मुर्दे को वह अपने कमरे के अंदर ले गया। दो घंटे तक उसने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद किए रखा। लोग बाहर टकटकी लगाए देखते रहे। वे परस्पर पूछ रहे थे, "अब क्या होगा?" एक ने कहा, "बच्चा जिंदा हो जाएगा।" दूसरा बोला, "अरे, यह कैसे हो सकता है? मुर्दे भी कभी जिंदा हुआ करते हैं?" प्रतीक्षा करने वाले कितने ही दूसरे लोगों के दिल धड़क रहे थे।

इतने में दरवाजा खुला। वह लड़का चंगा–भला होकर निकल आया। माता–पिता के हर्ष का तो कहना ही क्या था। सभी देखने वाले साधु की प्रशंसा में उंगलियाँ मुँह में देने लगे। कुछ दिन बाद साधु ने कहा, "यज्ञ के लिए एक लाख रुपया दरकार है।" बस, फिर क्या था! लोग दौड़–दौड़कर अपनी औकात से बढ़कर रुपया देने लगे। साधु के पास एक लाख से अधिक रुपया एकत्र हो गया।

यज्ञ के लिए तिथि निश्चित की गई। तैयारियाँ होने लगीं। परंतु उस तिथि के एक दिन पूर्व जब लोग मंदिर में गए तब वहाँ न साधु था न रुपया। किसी ने सोचा कि साधु ठग है। मिथ्या धारणाओं पर आश्रित उनकी बातों पर लोगों ने विश्वास किया और वे लुट गए। पुलिस में रपट लिखाई गई। कुछ दिन बाद वह साधु, रुपया और उसके साथी पकड़े गए, जिनमें वह ब्राह्मण, मुर्दा लड़का और उसके माता–पिता भी सम्मिलित थे। इस प्रकार ये ठग कई वर्ष पूर्व योजना बना कर उसको क्रियात्मक स्वरूप देते। आर्यसमाज के लोग कहते–बहुत–से मजहबों के प्रवर्तक ठगी से काम लेते हैं। दो–तीन को अपने साथ मिलाकर वे अपना उल्लू सीधा करने लगते हैं। यही चालाकी है जिस पर आम मदारी और जादूगर खेल करते समय आचरण करते हैं।

क्रांतिकारी भाई परमानंद से साभार

☞ *पृष्ठ 05 का शेष*

स्वार्थ को सच बनाने का ...

उसकी वाणी उसे सत्य सिद्ध करने में पूरी शक्ति लगा देती है।

ऐ मानव! तू यह अमानवीय प्रवृत्ति त्याग दे। सत्य और न्याय, इनके बिना तुझे कभी सुख और शान्ति नहीं हिलेगी। तू अपनी छोटी सोच को लेकर छोटे स्वार्थों की पूर्ति में इतना अंधा न बन। झूठ के सहारे मिलने वाले सुख की आयु झूठ से अधिक लम्बी नहीं हो सकती। संसार में कुछ भी तुझ अकेले के लिए नहीं है, तेरा स्वयं का जीवन भी दूसरों की सेवा में लगकर ही सफल और सार्थक होता है। जिन लोगों के सामने अपनी सज्जनता व अच्छाई का दिखावा कर रहा है, उनको तेरे कर्मों का फल नहीं देना। तू अपनी आने वाली अगली पीढ़ियों के लिए अपना अगला जन्म मत बिगाड़। ध्यान रख, ग़लत कर्मों से कमाया धन तो तेरे साथ न जाएगा, लेकिन इन ग़लत कर्मों के ग़लत संस्कार, बुरी आदतें, काम, क्रोध लोभ, मोह की प्रवृत्तियां जन्म–जन्मांतर तक तेरा पीछा नहीं छोडेंगी। तू स्वार्थ को सच सिद्ध करने के लिए जितना संघर्ष कर रहा है, उससे आधा संघर्ष भी सच पर चलकर स्वार्थ साधने के लिए करे तो तेरा जीवन सुख–शांति से भर उठेगा। या तो सत्य और न्याय को सबके लिए स्वीकार कर या फिर जीवन में एक बार भी सत्य न्याय की दुहाई मत दे। सत्य वही है जो सबके लिए एक जैसा हो, न्याय वही है जो सबके लिए एक जैसा हो। जो पाना चाहता है उसके लिए परिश्रम कर, श्रम के बाद जो मिले उसी में आनंद ले। ध्यान रख, तेरा वही है जो तूने कमाया छीना, लूटा या ठगा हुआ तेरा नहीं है। अगर तेरे पास ऐसा कुछ भी है तो वह लौटाना होगा, क्योंकि सत्य–न्याय सबके लिए एक जैसा होता है।

आर्य समाज श्री गंगानगर (राज.)
सम्पर्क–7597894991
9079039088

तत्ववेत्ता सत्य संशोधक आर्य समाज के संस्थापक पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती एक योगी थे

● हरिश्चन्द्र आर्य

गुरु विरजानंद के पास से शिक्षा समाप्ति के बाद वे 1863 ई में मथुरा से आगरा गए और वहाँ खूब योग साधना की और इतनी प्रगति की कि 18 घंटे की समाधि लगाने में सक्षम थे। अपनी अवभूत अवस्था में गंगा के किनारे सिद्धि प्राप्त की, जो योगी ही प्राप्त कर सकते थे वे भविष्य में होने वाली घटनाओं को देख लेते थे। स्वामी जी ने योग साधना के द्वारा कुछ आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर ली थीं।

घटनाक्रम जून 1866 में अजमेर में प्रार्थना समाज के बाबू श्यामलाल सिंह के घर से कुछ दूध लाया गया। स्वामी जी ने उसे ग्रहण करने से मना कर दिया और कहा यह दूध अनिच्छा से भेजा गया है। अतः मैं उनके परिवार में अनबन नहीं कराना चाहता। श्यामलाल सिंह ने जब इसे पहली बार सुना तो उन्हें आश्चर्य हुआ। परन्तु बाद में पता चला कि उनकी माँ ने साधु के लिए दूध भेजने पर आपत्ति की थी।

बुलंदशहर में कोई नंद किशोर स्वामी जी के लिए कुछ सब्जी लाए। स्वामी जी ने उन्हें लेने से मना कर दिया क्योंकि वह चोरी की थी, जब बहुत दबाव दिया गया तो स्वामी जी ने कहा कि आपने सब्जी तोड़ने से पहले मालिक से आज्ञा नहीं ली थी।

1877 ई. में लाहौर में उन्होंने अपने एक शिष्य गणपत राम से कहा कि वह तीस वर्ष से अधिक नहीं जिएगा अतः उसे विवाह नहीं करना चाहिए। गणपत राम ने विवाह न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। परन्तु उसके पिता ने उस पर दबाव डालकर विवाह करा दिया 28 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। यह घटना गणपत राम के भाई ताराचन्द ने मुज़फ्फरपुर में पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर को सुनाई थी।

एक दिन स्वामी जी ने आपने रसोइए से कहा कि तेरे पिता जी तुझे लेने आ रहे हैं। राजनाथ बाहर गया परन्तु वहाँ न तो उसके पिताजी थे न कोई और। आधे घंटे बाद राजनाथ के पिता जी आ गए और उससे घर चलने को कहा।

एक दिन 1872ई. में जब स्वामी जी कुछ लोगों के साथ बैठे थे, तो अचानक रुक कर बोले कोई विशेष घटना होने वाली है। थोड़े समय बाद एक व्यक्ति भोजन लाया और स्वामी जी से खाने को कहा, स्वामी जी ने वहाँ बैठे सभी लोगों से कहा कि यह भोजन विषैला है स्वामी जी ने उस व्यक्ति से फिर कभी ऐसी हरकत न करने को कहा।

उदयपुर में 1882 ई. में स्वामी सहजानंद सरस्वती ने स्वामी जी को झील की सतह पर पानी के ऊपर बैठे देखा। एक बार उन्होंने स्वामी जी को 24 घंटे की समाधि लगाए देखा था।

अमृतसर में जब स्वामी जी वेद–भाष्य लिख रहे थे तो अचानक कमरे से बाहर आए और अन्य सभी लोगों को भी कमरे से बाहर आने व कमरे का सभी सामान बाहर निकालने को कहा। लोग आश्चर्य चकित हो गए कुछ मिनटों बाद ही कमरे की छत गिर गई।

उदयपुर में जब स्वामी जी के साथ महामहिम महाराणा उदयपुर स्वामी सहजानन्द व कुछ अन्य व्यक्ति बैठे थे। स्वामी जी ने अचानक कहा पं. सुन्दरलाल जी आ रहे हैं। वह यदि पहले से कहते तो सवारी का प्रबन्ध कर दिया जाता। महाराणा ने कहा कि सवारी तो अभी भी भेजी जा सकती है। इस समय तो वह बैलगाड़ी में आ रहे हैं। एक बैल सफेद है दूसरे पर लाल धब्बे हैं। वह यहाँ कल पधारेंगे। पं. सुन्दरलाल अगले दिन उदयपुर पहुँचे। उसी प्रकार की गाड़ी में जिसका वर्णन स्वामी जी ने किया था।

30 अक्टूबर 1883 ई. को अजमेर में मृत्यु के कुछ समय पूर्व स्वामी जी ने. पं. सुन्दरलाल के विषय में पूछा जब उन्हें यह बताया गया कि वे नहीं आए हैं तो स्वामी जी ने कहा पं. सुन्दरलाल आए हैं। कुछ ही मिनटों में पं. सुन्दरलाल आ गए।

अधिष्ठाता उपदेश विभाग
अमरोहा उत्तर प्रदेश

वेदायुर्वेदम्

● रवींद्र पोतदार

क्षारपाक विधि

आयुर्वेद और एलोपेथी में एक विशिष्ठ अंतर ये है कि एलोपेथी में शार्टकट (संक्षिप्तकरण) है और उसमें *'ओमिशन्स'* अर्थात् अधूरापन आ जाता है। *मास मेन्युफेक्चरिंग–* बृहद् उत्पादन आयुर्वेद का अंग नहीं है, संभवतया इसीलिए यज्ञ अथवा लंगर का भोजन खाने का निषेध शास्त्रों में है कारण वही *"ओमिशन्स"* है।

दूसरा इससे प्रकृति को महान क्षति होती है, और जो अधूरापन रह जाता है उससे लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है। हमारी प्रकृति का नाश अथवा पॉल्यूशन का एक मात्र कारण यही है।

औषधि की मात्रा वैद्य तय करता है, विज्ञान का उपयोग कहाँ कितना करना यह शास्त्र तय करता है परंतु हम जिसे प्रजातंत्र कहते हैं उसमें नागरिक व जनता सबकुछ तय करती है। फिर चाहे वे शास्त्रों के ज्ञान से शून्य क्यों न हों? यही करण है प्रत्येक वस्तु की *मेन्युफेक्चरिंग* की और विपुल उत्पादन, क्वालिटी, एक्चुअल नीड़, मांग, उपयोगिता–योग्यता आदि से सरोकार नहीं रखता वह तो डिमांड देखकर, विद्युत, माइनिंग, केमिकल प्रोसेस, पानी, मछली, सब्जी, समाज, औषधियाँ, कमान, सड़क, गोसेवा, जंगलकटाई, पेट्रोलियम आदि की मात्रा तय करता है जिसके एवज में प्रकृति की भरपाई वह एक पाई भी नही करता?? यह सब वैदिक और आयुर्वेदिक तर्क है। इसके आगे आपके नेता, बाबा, इकोनोमिस्ट, साइंटिस्ट आदि फिलास्फर कहाँ खड़े हैं ये शांतिपूर्वक विचार कर आप तय करिए वरना दिल्ली के वातावरण (आबोहवा) का नमूना सामने खड़ा है। इससे निपटकर बताएँ?

एक बात और प्रसिद्ध ब्रह्माण्ड वैज्ञानिक 'हाकिंग्स' ने कही कि यह दुनिया दो सौ वर्ष में समाप्त हो जाएगी, एक दम असत्य है।, उसका गणित गलत हो गया। अभी 2 अरब वर्ष तक रहेगी परंतु युद्ध अथवा महामारी से ये जनसंख्या 10 प्रतिशत होकर प्रकृति पुनः अपने स्वरूप में उभरेगी अगले 200 वर्षों में और ये 'मेन्युफेक्चरिंग जाएेगा गर्त में और आयुर्वेद और यज्ञ का बोलबाला होगा

शस्त्रों में अनुशस्त्रों से क्षार अधिक प्रधान माना गया है। यह अपने छेदन, भेदन और लेखन के अतिरिक्त औषधियों से निर्मित होने से तथा विशेष क्रियाओं से प्रयुक्त होकर श्रेष्ठ कार्य करना है।

त्रिदोषन और सौम्य होकर भी दहन, पाचन और दारण करता है। आग्नेय होकर भी रक्तपित्त और अर्श में हितकारी है। क्षरण या क्षनन होकर भी पिया जा सकता है (एक मात्रा) में। अतः विषम स्थान में जहाँ शास्त्र द्वारा भी कार्य सिद्धि न हो सके वहाँ प्रयुक्त होकर लाभ पहुँचाता है अतएव शस्त्रानुशास्त्रों में प्रधानता है। दूषित मांस आदि के क्षरण (करने) से अथवा त्वचार, मांसादि के क्षणन (हिंसन) करने के कारण यह क्षार कहाता है।

आग्नेय औषधियों के द्वारा बनने से रस में कटु, वीर्य में उष्ण, गुणों में तीक्ष्ण वर्ण शोधादि का पाचक, गुल्मादि का विलायक, दुष्टव्रणों का शोधक शुद्धव्रणों का रोपणकर्ता (भरने वाला) वर्णों की क्लिनता (गीलापन) के शोषक, रक्तादि का स्तंभक, (Stypic), कठिनोन्नतमांसादि का लेखक, कृमि, आमदोष कफ़ और कुष्ठ, विष, मेदोवृद्धी (Obesity) का नाशक है। परन्तु अधिक मात्रा में सेवन से यह पुंसत्वर 'पौरूष शक्ति' का नाशक है। प्रतिसारणीय (वर्णों पर छिड़कना), और पानीय–यकृत प्लिहादि रोगों में पिया भी जाता है। प्रति सारणीय क्षारों का प्रयोग कुष्ठ, किरीभ, ददु्मण्डल, किलास–श्वेतकुष्ठ, भगंदर, अर्बुद, अर्श, दुष्टव्रण, नाड़ी, चर्मकील, तिलकालक, न्यच्छ, ब्यंग, मशक, बाह्यवृद्धि, कृमि, विषादि में होता है। उपजिह्वा, आधीजिह्वा, उपकुश, दन्तवेदर्भ, तीन प्रकार की रोहिणी (मुखरोगों में) क्षार का प्रयोग होता है।

पानीय क्षार का प्रयोग (कृत्रिम विष) गुम, उदररोग, अग्निसंग, अजीर्ण, अरोचक, आनाह शर्करा, अन्नरी, आभ्यांतर विद्रही, कृमि, विष और अर्श इन रोगों में होता है। पथरी जब टूट कर निकलती है तब उन टुकड़ों को शर्करा या सिफना कहते हैं।

रक्तपित्त ज्वरित (तुरंत ज्वर), पित्त प्रकृति, बालक, वृद्ध, दुर्बल तथा भ्रम, यह मुर्च्छा और तिमिर रोगों में यह पानीय क्षार अहितकारी है।

इस तरह बगैर आपरेशन अर्थात्शस्त्र और अनुशस्त्रों के प्रयोग बगैर गंभीर व्याधियाँ इन प्रयोगों से नष्ट की जा सकती हैं। यह आयुर्वेद का दैवीय गुण कहा जाएगा।

चंदसेरा
उज्जैन 456664

वैदिक साहित्य में नारी

● श्रीमती रीना जायसवाल

वैदिक साहित्य में नारी को बहुत आदरणीय स्थान दिया गया है। ऋग्वेद में स्त्री को ही घर कहा गया है। इसी आधार पर संस्कृत का सुभाषित है **'न गृहं गृहमित्याहुः गृहिणी गृहमुच्यते'** अर्थात् घर को घर नहीं कहते हैं अपितु गृहणी को ही घर कहा जाता है। विवाह के पश्चात् स्त्री को एक ओर पति, सास, ससुर और घर वालों की सेवा सुश्रुषा का निर्देश है तो दसूरी ओर उसे गृहस्वामिनी, गृहपत्नी आदि रूप में प्रस्तुत करते हुए उसे सास–ससुर, देवर–ननद आदि की साम्राज्ञी (स्वामिनी, मालकिन) कहा गया है। इससे ज्ञात होता है कि पत्नी को घर की व्यवस्था का पूर्ण अधिकार दिया जाता है और उसका कथन सबको मान्य होता है।

नारी सम्मान की यह प्रक्रिया न केवल वैदिक युग में, अपितु उपनिषदकाल और स्मृतिकाल में भी रही है। मनु का कथन है कि जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है और जहाँ इनका निरादर होता है वहाँ सारे कार्य निष्फल हो जाते हैं। अतएव नारियों को अंलकार, वस्त्र, भोजन आदि से सन्तुष्ट रखना चाहिए।

ब्राह्मण ग्रंथों में भी नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। ब्राह्मण में स्त्री को अर्धांगिनी अर्थात् पुरुष का आधा भाग कहा गया है। धार्मिक अनुष्ठान बिना पत्नी के अपूर्ण माना जाता है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि जब तक मनुष्य का विवाह नहीं होता तब तक वह अपूर्ण है, पत्नी को प्राप्त होने पर वह पूर्ण होता है। संस्कृति, परम्परा, गृहस्थ की ज्योति, गृहस्थ का वैभव और आमोद–प्रमोद सब कुछ पत्नी पर निर्भर है। शतपथ ब्राह्मण में स्त्रियों के अपमान और ताडंव आदि को निन्दनीय बताया गया है।

वैदिक काल में स्त्रियाँ शिक्षित होती थीं। उनका उपनयन होता था और उच्चशिक्षा प्राप्त करती थीं। वेदों में आध्यात्मिक शिक्षा के अतिरिक्त कन्याओं को काव्यकला, शस्त्रविद्या, ललित कलाओं संगीत, नृत्य, अभिनय आदि की शिक्षा देने की भी व्यवस्था की जाती थी। वेदों में नृत्य, संगीत, वाद्यों के उल्लेख और कन्याओं द्वारा अभिनय आदि का उल्लेख उनके ललित कलाओं में निपुणता के द्योतक है। ऐतरेव ब्राह्मण और गोपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि ललित कलाओं से आत्मा का परिष्कार होता है अर्थात् चारित्रिक और नैतिक उत्थान होता है। अतएव कन्याओं को ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती है। यजुर्वेद और ऋग्वेद में नारी के युद्धकाल में पारंगत होने का वर्णन है। ऋग्वेद में उसे शत्रुरहित, शत्रुनाशक, विजयिनी, एवं शत्रु को हराने वाली नाम से सम्बोधित किया गया है।

उपनिषदों और स्मृतियों में भी नारी के गौरव का उल्लेख मिलता है। हारीत स्मृति का कथन है कि दो प्रकार की स्त्रियाँ होती थीं। एक सद्योद्वाहा तथा दूसरा ब्रह्मवादिनी। ब्रह्मचार्य आश्रम की समाप्ति पर कुछ स्त्रियाँ तुरंत विवाह कर लेती थीं, और गृहस्थ का पालन करती थीं। उन्हें 'सद्धोद्वाहा' कहा गया है। कुछ स्त्रियाँ यज्ञ, वेदाध्ययन, स्वाध्याय, सत्संग और उच्चयोग विद्या में समय बिताती थीं, उन्हें 'ब्रह्मवादिनी' कहा जाता था। मैत्रेयी और गार्गी विदुषी नारियाँ हमारे समाज में हुई हैं। पाणिनी ने अध्यापन करने वाली शिक्षिका को 'उपाध्याय' और आचार्य का कार्य करने वाली स्त्री को 'आचार्या' नाम दिया। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी नारियों ने गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया था।

स्मृतिकारों ने गृहस्थ आश्रम को सर्वोच्च स्थान दिया है। मनु का कथन है जिस प्रकार सारे प्राणियों के जीवन का आधार वायु है, उसी प्रकार सभी आश्रमों का आश्रय स्थल गृहस्थ आश्रम है। विवाह संस्कार के साथ गृहस्थ आश्रम प्रारम्भ होता है। पति और पत्नी रथ रूपी रथ के दो चक्र हैं। पति एवं पत्नी के कर्तव्यों का विशद वर्णन वैदिक साहित्य में मिलता है। ऋग्वेद में पत्नी को गृहपत्नी अर्थात् गृहस्वामिनी या गृहलक्ष्मी कहा गया है। इसका अभिप्राय यह है कि घर की व्यवस्था का पूर्ण उत्तरदायित्व स्त्री का होता है। अतएव गृहस्वामिनी है। स्त्री को वैदिक साहित्य में सम्मानजनक स्थान दिया गया है वेदों में यह उच्चशिक्षा दी गयी है कि स्त्री अबला नहीं सबला है। वह स्वयं वीर और वीरपुत्रों की माता होने के कारण शत्रुओं या कुदृष्टि से देखने वालों का मर्दन कर सकने में समर्थ है। शिक्षा की समाप्ति के बाद योग्य वर–वधु का विवाह होने का विधान वैदिक साहित्यमें प्राप्त होता है। पति को पत्नी की पत्नी को पति की आवश्यकता अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए पड़ती है। इस भौतिक सुख प्राप्ति, संतान प्राप्ति सहयोगी और सहायक की प्राप्ति के लिए विवाह प्रथा का आरंभ हुआ। पारिवारिक आर्थिक समृद्धि के लिए वर की आवश्यकता हुई और गृहव्यवस्था के भलीभाँति संचालन के लिए वधू की। इस समन्वय के लिए विवाह एक सामाजिक आवश्यकता है। वधु के गुणों का भी वर्णन वैदिक साहित्य में है। कन्या ब्रह्मचारिणी हो, बुद्धिमती हो, मृदुभाषिणी हो, स्वाभिमानी हो मधुर स्वभाव वाली हो एवं उत्तम संतान देने में समर्थ हो।

वेदों में विवाह के कुछ विशेष उद्देश्यों का निर्देश है। ऋग्वेद में विवाह के उद्देश्य स्त्री का सौभाग्यवती होना तथा योग्य संतान को जन्म देना, साहसपूर्ण कार्य करना, धनलाभ, शक्ति संचय बताए गए हैं। अथर्ववेद में कहा गया है कि जब वर–वधु युवा हों और दोनों के हृदय एक दूसरे के प्राप्ति की कामना करते हैं तब उनका विवाह सम्बन्ध करना चाहिए। सच्चरित्र और सुशील कन्या का विवाह सुयोग्य वर से होना चाहिए। अथर्ववेद में विवाह संस्कार के सम्बन्ध में पाणिग्रहण, शिलारोहण लाजाहोम, सप्तपदी, सूर्य दर्शन, हृदय स्पर्श ध्रुव और अरून्धती दर्शन, समुंगलीकरण का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में कहा गया है विवाह के पश्चात्, पतिगृह को जाती हुई वधू को उसके माता–पिता आदि निधी खर्च के लिए जो धन देते हैं वह स्त्रीधन होता है। वैदिक विधि से किया जाने वाला विवाह संस्कार अटूट होता था। यजुर्वेद में कहा गया है कि यह बन्धन अटूट है। शतपथ ब्राह्मण में इसकी पुष्टि की गयी है। वैदिक साहित्य में स्वयंवर प्रथा प्रचलित थी। सीता और राम, द्रौपदी–अर्जुन, दमयन्ती–नल आदि के विवाह स्वयंवर प्रथा से ही हुए थे। स्वयंवर में वर तथा इच्छुक बधुएँ एकत्र होती थीं। स्वयंवर के लिए आए हुए वरों का परिचय दिया जाता था।

प्राचीनकाल में संयुक्त परिवार की व्यवस्था का उल्लेख हमें मिलता है। वह पुरुष प्रधान व्यवस्था थी। संयुक्त परिवार के सम्बंध में सभी के कर्तव्यों का विशद वर्णन हमें प्राप्त होता है। वेदों में पुत्र को भी बहुत महत्त्व दिया गया है। नारी का कर्तव्य पुत्र प्राप्ति भी बताया गया है। वैदिक साहित्य में संस्कार का भी विशद वर्णन है।

अतः हमारे वैदिक साहित्य में नारी का उच्चस्थान देखने को मिलता है। उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वैदिक साहित्य में स्त्री को जो सम्मानजनक स्थान प्राप्त था उसी को वर्तमान समय में दिए जाने की आवश्यकता है।

B-54 सूरजकुण्ड कालोनी
गोरखनाथ–273015 (उत्तर प्रदेश)

पुदीना

आयुर्वैदिक मत– यह एक प्रसिद्ध बूटी है जो तेज सुगन्ध युक्त है। कटु रस, लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। वात–कफ नाशक, दीपन रोचन दृघ एवं आहमान नाशक है। अग्नि माद्य शूल–कृमि नाशक, विषूचिका, अति, सार, हैजा, जीर्णज्वर एवं कास संग्रहणी नाशक है।

वैज्ञानिक मत– पुदीने में विटामिन–ए अधिक मात्रा में है। विटामिन की दृष्टि से पुदीना दुनियाँ के समस्त रोगों में रक्षा करने वाली एक जड़ी बूटी के समान है। पुदीने में अजवायन से मिलने वाले सभी गुण हैं। पुदीने से थायमोल भी उपलब्ध होता है। पृथक्करण की दृष्टि से पुदीने में अग्नि प्रदीपक जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाले तत्व भी बड़ी भारी मात्रा में विद्यमान हैं। पुदीना भूख लगाने वाली महौषध है। त्वचा की गर्मी समाप्त होती है अतिरिक्त वसा को कम करता है। इसमें मुख्य तत्व थायमोल होता है।

उपयोग

1. पुदीने का रस आधा तोला, अदरक का रस आधा तोला, सैंधा नमक, 1 मात्रा मिलाकर पीने से पेट का शूल मिटता है।
2. पुदीने का रस पीने से खाँसी अतिसार और हैजे में लाभ होता है।
3. पुदीने का ताज़ा रस शहद के साथ सेवन करने से आँतों की खराबी और पेट के रोगों में लाभ मिलता है।
4. पुदीने का ताज़ा रस शहद के साथ प्रयोग करने से त्रिदोष ज्वर से होने वाले विकारों में लाभ होता है।
5. पुदीने का ताजा रस कफ सर्दी में अत्यन्त उपयोगी है।
6. पुदीने–तुलसी, काली मिर्च, अदरक आदि की चाय पीने से वायु दूर होती है, भूख खूब लगती है।
7. ताजा पुदीना, छुआरा सैंधा नमक, हींग, काली मिर्च और जीरा इन सबकी चटनी बनाकर उसमें नीबू का रस निचोड़कर खाने से मुँह में रुचि स्वाद पाचन आता है।

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय, अमरोहा, उत्तर प्रदेश

विश्व शान्ति हेतु इस्लामिक दर्शन में संशोधन आवश्यक

● विनोद कुमार सर्वोदय

सामान्यतः आज देश के विभिन्न भागों में बंगलादेशी व पाक परस्त ज़िहादी अनेक प्रकार से इस्लामिक आतंकवाद में लिप्त हैं, जिससे बढ़ती हुई राष्ट्रीय व सामाजिक समस्याओं का किसी को अनुमान ही नहीं हो रहा है क्योंकि भारत की हज़ारों वर्ष पुरानी सत्य सनातन संस्कृति और दर्शन को आज के छद्म सेक्युलरवादी केवल मैकाले व मार्क्सवाद की दृष्टि से देखने के आदी हो चुके हैं। साथ ही हमारी संस्कृति को नकारने के लिए पाकिस्तानी विचारधाराओं को हमारे विभिन्न नगरों, विश्वविद्यालयों, मीडिया समूहों, बुद्धिजीवियों, अधिकारियों और राजनैतिक दलों में विस्तार मिल रहा है। जब इस्लामिक ज़िहाद से हमारे देश के साथ-साथ पूरा विश्व ही चिंतित है, तो भी नई दिल्ली में आयोजित "वर्ल्ड सूफ़ी फोरम" में "इस्लाम का अर्थ शांति" यह विचार कोई राजनैतिक विवशता ही कही जा सकती है। आतंकवाद को किसी धर्म से जोड़ने का विरोध करते हुए भी धर्म के नाम पर हिंसा करने वालों को धर्मविरोधी बताया गया। कहा गया कि सूफ़ी विचार सभी को एक मानता है और वह मानवीयता व अमानवीयता के संघर्ष में अहम भूमिका निभा सकता है। इससे ऐसा आभास हुआ कि राजनेताओं की भाषण कला लोकतांत्रिक राजनीति के अनुरूप बहुत कुछ कहने का सामर्थ्य रखती है। जबकि मुगलकालीन इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएँगे जब सूफियों ने भी भारत में इस्लाम स्थापित करने के लिए मुगल आदि आक्रान्ताओं का साथ दिया व लिया होगा? अगर सूफियों का सन्देश वैश्विक शांति है और वह सभी को एक मानते हैं व किसी में भेदभाव नहीं करते तो इस फोरम में सम्मिलित होने वाले 20 देशों के मुस्लिम धर्मगुरुओं को कश्मीर, अफगानिस्तान, ईराक व सीरिया आदि क्षेत्रों में चल रहे भयानक नरसंहार से कराहती हुई मानव पीड़ा का अहसास अभी तक क्यों नहीं हुआ? भारतीय उपमहाद्वीप व यूरोप के विभिन्न देशों में ज़िहाद के लिए पैर पसारता दुर्दांत आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट आदि की भविष्य की योजनाओं के विरुद्ध क्या किसी सूफी मुस्लिम धर्मगुरु ने कोई सकारात्मक सक्रियता का परिचय दिया था भविष्य में ऐसा कुछ साहस करने की संभावना व्यक्त की है?

फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आतंकवादी किसी सनक, मूर्खता या धनलोभ के कारण ही अपनी जान नहीं देते। वे अल्लाह की राह पर अल्लाह के लिए अपनी जान देते हैं। तभी तो अधिकतम आतंकवादी घटनाओं में एक विशेष (मुस्लिम) समुदाय की संलिप्तता को प्रायः प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सभी मानते हैं। जबकि कुछ वर्ष पूर्व के समाचार पत्रों के अनुसार अमरीकी संसद की आयी एक रिपोर्ट तो प्रत्यक्ष कहती है कि भारत में घरेलू इस्लामी आतंकवाद बढ़ रहा है।

ध्यान देने वाली बात यह है कि जब तक मदरसों में इस्लामी शिक्षा द्वारा ज़िहाद को पवित्र बताया जाता रहेगा तब तक आतंकवाद रुक नहीं सकता और आतंकवादी जिस विचारधारा के पोषक हैं उसमें धर्मनिरपेक्षता, मानवता व मानवाधिकार आदि के दर्शन भी नहीं होते। इन इस्लामिक ज़िहादियों को विश्व में इस्लामिक झंडे लहराने की महत्वाकांक्षा ने भी अत्याचारी बना दिया है।

परिणामस्वरूप आज ज़िहादी मानसिकता से सभी व्यथित हैं फिर भी अगर इसके मूल कारणों की अवहेलना की जाती रहेगी तो इस्लाम में वैश्विक मानवीय विचारधारा का सूत्रपात कैसे हो पाएगा?

दिल्ली के मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री जेड.एस. लोहात द्वारा 31 जुलाई 1986 में कुरान के विषय में किए गए एक ऐतिहासिक निर्णय के अनुसार कुरान की उन आयतों में जो बहुत ही खतरनाक और घृणास्पद होने के कारण मुसलमानों व अन्य समुदायों के बीच भेदभाव व द्वेष का निर्माण करती हैं, में आवश्यक संशोधन करवा कर साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने का प्रयास समस्त मानवतावादियों के लिए सार्थक हो सकता है। आज जब वर्तमान युग में मज़हबी आतंक 'जिहाद' से भारत सहित विश्व के अनेक देशों में मानवता संकट में है तो फिर कोई यह क्यों नहीं सोचता कि इस्लामिक विद्याओं और उनके दर्शन में सुधार करके सकारात्मक वातावरण बनाया जाए? यह विचित्र है कि मुस्लिम समाज के बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, सामाजिक एवं धार्मिक नेताओं आदि ने कभी भी अपने धार्मिक दर्शन व विद्याओं में संशोधन का विचार ही नहीं किया बल्कि वे सभी रुढ़िवादी व कट्टरपंथी विचारों को या तो प्रोत्साहित करने में ही लगे रहे या फिर उदासीन रहे। काश ऐसा होता तो आज पृथ्वी निर्दोषों व मासूमों में रक्त से लाल न होती। ज़िहादी जुनून के प्रकोप से समाज व संसार सुरक्षित करते हुए विकास के पथ पर निर्बाध गति से अग्रसर रहता। साथ ही सभ्यताओं के टकराव से विश्व को सुरक्षित करते हुए शांति स्थापित करने में सरलता होती।

यह समझना होगा कि सत्य सनातन वैदिक हिन्दू धर्म तथाकथित कुछ सम्प्रदायों के अनुसार "अन्य धर्मियों की हत्या करो या उनका धर्मांतरण करो" अथवा "छलकपट" की नीति अपनाकर अन्य धर्मियों का धर्मांतरण करो" जैसी शिक्षा नहीं देता। जबकि कुरान के दूसरे अध्याय के 27 पेजों में कम से कम 25 बार गैर मुस्लिमों को हानि पहुँचाने वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है। उनके लिए नकारात्मक विशेषण भी हैं। जिसको पढ़कर प्रश्न उठता है कि कितनी अभद्र बातें भी धार्मिक ग्रन्थ का हिस्सा हो सकती हैं? इसलिए अत्याचारी व अमानवीय कट्टरपंथी विचारधाराओं की जड़ों को ढूँढ कर उनको सकारात्मक बनाना कठिन हो सकता है परन्तु असंभव नहीं? यह आज की प्रमुख आवश्यकता है।

यह भी विचार करना चाहिए कि महान विद्वान व चार बार ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे विलियम ग्लैडस्टोन (1809-1898) ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में यह उल्लेख किया था कि जब तक धार्मिक ग्रंथ में ऐसी बातें रहेंगी तब तक दुनिया में शान्ति नहीं होने वाली। कुछ पिछले समाचारों से यह भी ज्ञात हुआ कि सन् 2008 में संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) की एक रिपोर्ट में बताया गया था कि तालिबान व अलकायदा आदि ज़िहादी संगठन पाक व अफगानिस्तान की सीमाओं पर अनेक छोटे-छोटे बच्चों को धन देकर व जन्नत का वास्ता देकर ज़िहाद के लिए प्रशिक्षित करके "फ़िदायीन" बनाते हैं। इसके अतिरिक्त एक वरिष्ठ पत्रकार व राष्ट्रवादी विचारक के प्रकाशित एक लेख में ज़िहाद के विषय में कुछ निम्न तथ्य मिले-

ए बी सी (ABC) के पत्रकार बिल रेडेकर के अनुसार- एक बार जब पेशावर के पास एक प्रसिद्ध मदरसे में फर्श पर बैठ कर 60 लड़के कुरान की पढ़ाई कर रहे थे, "तो मैंने उन छात्रों से पूछा कि स्कूल खत्म करने के बाद उनमें से कितने डॉक्टर या इन्जीनियर बनना चाहेंगे? केवल दो लड़कों ने हाथ उठाया। फिर मैंने पूछा कि कितने लड़के बड़े होकर ज़िहाद के लिए लड़ना चाहते है? सबने हाथ उठा दिए।"

एक पाकिस्तानी पत्रकार आरिफ़ ज़माल ने कश्मीर में सक्रिय रहे 600 ज़िहादियों के अंतिम पत्रों का अध्ययन करके "एशिया टाइम्स" में शोध प्रकाशित किया था। उन्होंने पाया कि शायद ही ऐसा कोई पत्र हो जिसमें ज़िहाद में मरने के बाद इनाम स्वरूप जन्नत में मिलने वाली 72 हूरों का जिक्र न किया गया हो। इसका अर्थ स्पष्ट है कि उन्हें हूरों का लालच नहीं दिया गया होता तो वे ज़िहाद के लिए नहीं जाते। अपने अंतिम पत्र में ज़िहादियों ने यह लिख कर इसको ज़िहाद के लिए अत्यधिक उकसाने वाला बिंदू माना है।

अफ़गानिस्तान में संयुक्त राष्ट्र मिशन (UNAMA) की अधिकृत स्कालर क्रिस्टीन फेयर ने ज़िहादी मानव-बमों पर अध्ययन किया था। उन्होंने पाया कि लगभग सभी आत्मघाती ज़िहादी इस विश्वास से प्रेरित होते हैं कि "काफ़िर को मारना हमारा कर्तव्य है"। इसमें किसी ने चाहे कोई गलत कार्य किया हो या नहीं, उसका "काफ़िर" होना ही काफ़ी है। उपरोक्त के अतिरिक्त विश्व के अनेक मानवतावादी व समाजशास्त्रियों का भी यह मानना है कि अगर समय रहते ज़िहादी मानसिकता को नियंत्रित नहीं किया गया तो वैश्विक ज़िहाद की विषबेल को फैलने से कोई रोक नहीं पाएगा?

इस्लाम को शांति का मज़हब व इसके अनुयायियों को शांतिदूत बताने वालों को यह स्वीकार करना होगा कि इस्लामिक ज़िहाद अनेक हिंसात्मक, भयावह और विध्वंसकारी घटनाओं के साथ-साथ संसार के सुंदर रूप को भी नष्ट करने का जुनून है। इसलिए इस्लामिक विद्याओं व इनके दर्शन शास्त्रों में आवश्यक सकारात्मक संशोधन करवाना इन विद्याओं के विशेषज्ञों और उदारवादी धर्मगुरुओं का प्रमुख दायित्व बनता है।

वर्तमान विज्ञानमय आधुनिक युग में मध्यकालीन रुढ़िवादिताओं व परंपराओं में आवश्यक संशोधनों द्वारा वैश्विक ज़िहाद को नष्ट करके विश्व में मानवता की रक्षा व शांति की स्थापना हेतु इस्लामिक धर्मगुरुओं का महत्त्वपूर्ण योगदान लिया जा सकता है।

guptavinod038@gmail.com

पत्र/कविता

सड़कों एवं सार्वजनिक स्थलों पर नमाज़

नमाज़ के नाम पर या अन्य किसी भी धार्मिक क्रिया कलाप के लिए सड़क एवं सार्वजनिक स्थल को बाधित करना गैर कानूनी एवं अधार्मिक कृत्य है। जिसका विरोध होना चाहिए क्योंकि ऐसा करने वाले दूसरों को तकलीफ पहुँचाते हैं एवं दूसरों के लिए परेशानी पैदा करते हैं।

हरियाणा के गुरुग्राम में सार्वजनिक स्थल पर नमाज़ केवल हरियाणा राज्य की ही समस्या नहीं है बल्कि यह राष्ट्रीय समस्या हो चुकी है। आये दिन सड़क को बाधित करना सार्वजनिक स्थल को बाधित करना पूरे देश की समस्या बन चुकी है।

आप किसी आवश्यक कार्य से कहीं जा रहे हैं किसी रोगी को डॉक्टर के पास ले जा रहे हैं आपको अचानक पता चलता है कि सड़क बन्द है तो आपको कितनी परेशानी का सामना करना पड़ता है ये सब को मालुम है। इस कृत्य का विरोध करने वाले जागरूक नागरिक हैं। राष्ट्रहित एवं जनहित में ऐसा कर रहे हैं उनके इस विरोध का सभी को समर्थन करना चाहिए। हरियाणा के मुख्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर बधाई के पात्र हैं उन्होंने स्पष्ट कहा है सड़कों एवं सार्वजनिक स्थल पर किसी भी प्रकार धार्मिक कृत्य एवं नमाज़ करना गैर कानूनी एवं अनुचित है।

मैं एक बस में जिसमें लगभग पचास–साठ यात्री बैठे थे, निजामुद्दीन स्टेशन तक जा रहा था। कुछ देर जाने के बाद ड्राईवर ने बस को रोक दिया। मैंने पूछा बस क्यों रोक रखी है? ड्राईवर कहने लगा नमाज़ पढ़ने के लिए कन्डक्टर गया है। मैंने कहा पचास–साठ लोगों का समय कितना कीमती है किसी को ट्रेन पकड़नी है किसी को डॉक्टर के पास जाना है। बस में बैठे लोगों ने मेरी बात का समर्थन किया। दरअसल इसके पीछे कट्टरवादी एवं संकुचित सोच है।

अतः हमें अपनी सोच बदलनी चाहिए। सांसारिक कर्तव्यों को करते हुये संसार के मालिक को सुबह शाम फुरसत के क्षणों में बन्दगी करनी चाहिए। कर्तव्य सबसे बड़ा धर्म है। साम्प्रदायिक एवं मज़हबी दीवारों को लांघ कर मानवता की बात करें। दूसरों के लिए उपयोगी बनें ना कि बाधक बनें। यहीं धर्म का सार है।

आचार्य श्रुति भास्कर सहारनपुर
मो. 9412742557

****

वृक्ष का करुण क्रन्दन

**कितने प्यार से किसी ने, बरसों पहले बोया था मुझे।
कितना विशाल, कितना घना आज, मैं वृक्ष हो गया हूँ।
फूलों–फलों से लदा हरा भरा, मैं वृक्ष हो गया हूँ।।**

**पर यदा कदा यह विचार मन में आता रहा।
क्या मैं भी दूसरे पेड़ों की तरह काटा जाऊँगा।
क्या मैं भी ऐसे ही वीरगति पाऊँगा।।**

**दूषित हवा लेकर सभी से, स्वच्छ हवा देता रहा हूँ।
इतना बड़ा उपकार सभी का, सदा ही मैं करता रहा हूँ।
जीवित रहकर ही ''नमन्ति सप्पला वृक्षाः'' सार्थक कर पाऊँगा।।**

**कुछ तो दया करो, मत काटो मुझे, मत काटो मुझे।
यही मेरी करुणा भरी पुकार है, यही मेरी गुहार है।
मत काटो मुझे, मत काटो मुझे, मत काटो मुझे।।**

मानव की उत्साहपूर्ण घोषणा

**करुण क्रन्दन सुन द्रवित हो, मानव बोला–सुनो हमारे मीत।
अब से कभी पेड़ नहीं कटेंगे, बन जाएगी यह नई रीत।
वह दिन अब दूर नहीं, जब हर मानव वृक्ष बचाने आएगा।**

**जंगल अब नहीं घटने पाएगा, पेड़ न कोई अब कटने पाएगा।
हर मानव इक पेड़ लगाएगा, चैन की सांस तभी ले पाएगा।
पर्यावरण संतुलित तभी होगा, जनजागरण जब घर–घर हो जाएगा।**

**मेरा निश्चय है बस एक यही, पेड़ न कोई कटने पाए।
जनजीवन का है आधार वृक्ष, फिर इसका तन क्यों मुरझाए।
मेरी है हुंकार यही कभी न यह कटने पाए।
प्रियवर कभी न यह कटने पाए।।**

वेद प्रकाश शास्त्री
शास्त्री भवन, 4&E, कैलाश नगर,
फाजिल्का–152123 (पंजाब) मो. 9463428299

सर्वस्व त्यागी महात्मा हंसराज जी

त्याग कर लोभ को, वो महान त्यागी बन गए।
कर दयानन्द का काम, वे वेदानुरागी बन गए।।

दयानन्द का सपना पूरा न होता।
अगर हंसराज इतना त्यागी न होता।।

ना कुछ लिया तुमने, कभी भी किसी से।
ना कुछ कहा तुमने, कभी भी किसी से।।

दयानन्द का काम, कभी पूर्ण ना होता।
अगर हंसराज ने, तब ये कहा ना होता।।

नहीं लूँगा, वेतन ना कोई सुख साधन।
अपने गुजारे का, अपने आप ही जुटाऊँगा साधन।।

ऐसा जादू किया तूने, सबका जीत लिया मन।
तेरे ही त्याग से, ये खिल रहा है चमन।।

सदा ही जग में रहेगा, तुम्हारा अभिवन्दन।
करण सब तुम्हारा, करते रहेंगे अभिनन्दन।।

आचार्य करणसिंह शास्त्री
एस.सी.डी.वी. पब्लिक स्कूल, सै–56, नोएडा

तैतिरीयोपनिषद् में अध्यापक कैसा हो?

तैतिरीयोपनिषद् ग्रंथ में आता है–

मातृदेवो भवः पितृदेवो भवः, आचार्य देवो भवः।

अर्थात् माता–पिता व शिक्षक ये तीनों देवतुल्य हैं। तीनों लोकों में इनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। तीनों परमवन्दीय हैं। मानव जीवन में गुरु का स्थान सर्वोपरि है। गुरु ही मनुष्य को सच्चा मार्ग दिखाकर इस संसार रूपी भवसागर से पार जाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

धर्मशास्त्रों में गुरु के विषय में वर्णित है: जो असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाए वह सच्चा शिक्षक है। एक शिक्षक उस दीप की भाँति हैं जो स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी ही नहीं देता बल्कि अनेक दीपों को प्रकाशित भी करता है। इस लिए उसको राष्ट्रनिर्माता, युग निर्माता, अच्छे समाज का सृजनदार व सामाजिक इन्जीनियर आदि विशेषणों से सुशोभित किया गया है। शिक्षक समाज व राष्ट्र का वह सम्बल है जिसके बिना सुदृढ़ समाज व राष्ट्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

शिक्षक शिक्षार्थियों का जैसा मार्ग दर्शन करेगा, वैसा ही राष्ट्र बनेगा। इसलिए विद्यार्थियों में युवा पीढ़ी व समाज में उच्च आदर्शों व संस्कारों का निर्माण करने का दायित्व शिक्षक का ही है। शिक्षक ही विद्यार्थी को प्रगतिशील, सांस्कृतिक एवं सभ्य बनाता है। उसकी विचारशक्ति, तर्क शक्ति, बौद्धिकता, प्रतिभा–रूझान, कुशलता, उच्च नैतिक मूल्यों व रूचि को विकसित करता है। अपने इन्हीं गुणों के कारण एक शिक्षक राष्ट्र की अक्षय सम्पति रहा है और रहेगा भी।

यदि एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अच्छा इन्सान बनाने में कामयाब हो जाता तो देश में व्याप्त हर समस्या स्वतः ही सुलझ जाए। ऐसा तभी संभव है जब शिक्षक समूह अपनी जिम्मेदारी समझे और विद्यार्थियों का आदर्श व प्रेरणास्रोत बनकर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करे। खेद है कि आज शिक्षक ट्यूटर बन गया है।

मोहन लाल मगो
P-65, पाण्डव नगर,
मयूर विहार–दिल्ली–110091

****

डी.ए.वी. कालांवाली में हुआ भव्य यज्ञ

माता पुन्ना देवी डी.ए.वी. सी. सै. पब्लिक स्कूल कालांवाली में आदरणीय प्रधानाचार्या 'श्रीमति शबनम हांडा' की अध्यक्षता में एक भव्य यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में सभी बच्चों ने पूर्ण उत्साह व श्रद्धा के साथ वैदिक मंत्रो का उच्चारण करते हुए यज्ञ की पावन अग्नि में आहुतियाँ डालीं।

बच्चों ने महात्मा हंसराज जी के जीवन से संबंधित सुन्दर कविताएँ व भजन तथा भाषण प्रस्तुत किए। प्रधानाचार्या जी ने सभी बच्चों को पूर्ण ईमानदारी तथा मेहनत के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय का सम्पूर्ण शिक्षक वर्ग उपस्थित रहा।

आदर्श जीवन निर्माण शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संरक्षण एवं माटुंगा बोर्डिंग के विशेष सहयोग से आठ दिवसीय आदर्श जीवन निर्माण शिविर श्री हीर भोजपाल एण्ड संस कच्छी विसा ओसवाल जैन छात्रालय माटुंगा मुम्बई में आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 135 बच्चों ने भाग लिया। शिविर का शुभारंभ श्रीमती सरोजनी गोयल, प्रधाना, आर्य महिला समाज, मांटुगा एवं श्री वेदप्रकाश गर्ग, प्रधान, आर्य समाज चेम्बूर के कर कमलों से ध्वजारोहण के साथ हुआ। शिविर का संचालन आर्चाय नरेन्द्र शास्त्री संचालक–आर्य वीर दल मुम्बई ने किया।

शिविराध्यक्ष श्री देवेन्द्र एल. शाह मानद मंत्री, माटुंगा बोर्डिंग ने आर्य वीरों को सम्पूर्ण संरक्षण प्रदान करते हुए सभी शिक्षकों और कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं दीं।

व्यायाम शिक्षक श्री सौरभ आर्य, प्रशांत आर्य (दिल्ली), मनोज आर्य, अशोक आर्य एवं पवमान आर्य मुम्बई ने पूर्ण निष्ठा से बच्चों को व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे, धनुर्विद्या, स्केटिंग, संध्या हवन, नैतिक शिक्षा, वैदिक गणित, वैदिक सभ्यता, संस्कृति व महापुरुषों के जीवन चरित्र तथा संपूर्ण विकासादि का प्रशिक्षण दिया। शिविर में बच्चों के बौद्धिक विकास हेतु विभिन्न स्थानों से विद्वानों को बुलाया गया था, जिसमें श्री संजय शेंडे ने स्क्रीन प्रोजेक्टर के माध्यम से आर्य वीरों को व्यक्तित्व विकास व सफलता प्राप्ति के उपाय बताये।

दयानन्द मॉडल स्कूल जालन्धर में नव सत्र पर हुआ यज्ञ

जालंधर दयानंद मॉडल सी. सै. स्कूल दयानंद नगर जालंधर में सत्र के शुभारंभ के उपलक्ष्य में हवन–यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें प्री–प्राइमरी तथा आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अध्यापकों सहित बहुत उत्साह तथा श्रद्धा से भाग लिया। मंत्रोच्चारण तथा हवन–सामग्री से वातावरण सुगन्धित, पवित्र तथा अध्यात्मिक हो उठा। प्रभु भक्ति के भजनों

तथा प्रार्थना से सभी भाव–विभोर हो गए। विद्यालय की सर्वांगीण प्रगति और विकास के लिए परमसत्ता की कृपा का आह्वान किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती वंदना अरोड़ा ने बच्चों को मेहनत करने तथा अनुशासित रहकर भविष्य में सफलता के नए सोपान तय करने की प्रेरणा दी। उन्होंने आशीर्वाद स्वरूप बच्चों पर पुष्प वर्षा की। शांति पाठ के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

पूण्डरी में हुआ 51 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज पूण्डरी के तत्त्वावधान में डी.ए.वी. स्कूल पूण्डरी के सौजन्य से 51 कुण्डीय सत्य सनातन वैदिक संस्कृति रक्षा महायज्ञ का आयोजन पुण्डरी की अनाज मंडी में किया गया। इस कार्यक्रम में यज्ञ ब्रह्मा आचार्य ज्ञान चंद शास्त्री, भिवानी एवं मुख्य वक्ता स्वामी यज्ञमुनि महाराज, वैदिक अनाथालय मेरठ उत्तर प्रदेश रहे। कार्यक्रम में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान श्री कुलवन्त सैनी विशेष रूप से उपस्थित रहे। महामंत्री अनिल आर्य ने आर्य समाज पूण्डरी

द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती साधना बख्शी, प्राचार्या डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पूण्डरी ने की। स्वामी यज्ञमुनि महाराज ने बताया कि इस संसार को श्रेष्ठ मार्ग पर ले जाने वाले आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द जी ने की थी। अपनी संस्कृति को बचाने का ये कार्य अत्यंत प्रंशसनीय है। प्राचार्या डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पूण्डरी श्रीमती साधना वख्शी ने बताया कि आर्य समाज डी.ए.वी. की माँ है। आर्य समाज का कार्य करना अपने माता–पिता की सेवा करने के समान है।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

द्वारा किए गए कार्यों का प्रचार–प्रसार करना मुख्य सुझाव थे।

अधिवेशन के आरंभ में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लारेंस रोड, अमृतसर के श्री नरेन्द्र कुमार डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर के श्री राधा बल्लभ सक्सेना एवं डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, खारघर मुम्बई की श्रीमती रंजना चटर्जी ने बहुत ही मधुर भजनों की प्रस्तुति दी, जिन्हें सुनकर अधिवेशन में उपस्थित सभा प्रतिनिधि बहुत प्रभावित हुए। इन संगीत अध्यापकों ने इस वर्ष ऋषि जन्मोत्सव पर हुई अखिल भारतीय संगीत गोष्ठी में द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना स्थान प्राप्त किया था।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 06/07-06-2018

डी.ए.वी. दुर्गापुर में आर्य समाज स्थापना दिवस व भगत सिंह की पुण्य तिथि मनाई गई

आर्य समाज डी.ए.वी. मॉडल स्कूल दुर्गापुर ने अपनी गतिविधियों को विद्यालय से बाहर साधारण जनमानस तक पहुँचाने के उद्देश्य से इस बार आर्य समाज का स्थापना दिवस एवं अमर शहीद भगत सिंह की पुण्य तिथि आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के साथ मिठाई और वस्त्र वितरण करके मनाई। कार्यक्रम का शुभारंभ आर्य युवा समाज के सभी सदस्यों ने बृहद यज्ञ से किया, जिसकी मुख्य यजमान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पश्चिम बंगाल की प्रधान एवं क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती पापिया मुखर्जी रही। यज्ञ के पश्चात् बेनाचित्ति के चासी पाड़ा के नेताजी कॉलोनी में स्थित शिशु शिक्षा केन्द्र जाकर प्रधान महोदया ने और आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने मिलकर सभी छात्रों में मिठाई एवं सबके लिए एक–एक जोड़ी वस्त्र वितरण किए।

इस कार्यक्रम में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कन्यापुर, आसनसोल की प्रधानाचार्या सुश्री कल्याणी नायक एवं डी.ए.वी. के एस.टी. पी. आसनसोल की मुख्याध्यापिका सुचरिता चैटर्जी, बोरो कमेटी की चेयरपर्सन सुस्मिता भुई ने भी भाग लिया।

प्रधान महोदया ने आर्य समाज के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "सभी वर्ग के लोगों के कल्याण के लिए आर्य समाज की स्थापना 1875 में महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने गुरु स्वामी विरजानंद जी की प्रेरणा से मुम्बई में की थी। आर्य समाज का सबसे अधिक प्रभाव विद्या तथा सामाजिक सुधार के क्षेत्र में देखने को मिलता है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज और डी.ए.वी. विद्यालयों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अमर शहीद भगत सिंह भी आर्य समाजी परिवार से ही थे। आर्य समाज के विचारों से प्रेरित होकर और देश के प्रति अटूट भक्ति से ओत–प्रोत होकर भगत सिंह ने देश को आज़ाद करवाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। इनकी भक्ति और शक्ति को मैं हृदय से श्रद्धांजलि देती हूँ। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार देश के सभी बच्चे महर्षि दयानंद जी और अमर शहीद भगत सिंह से प्रेरणा लेकर देश की उन्नति में और समाज सुधार में अपना योगदान देते रहेंगे।

अंत में शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. लारेंस रोड, अमृतसर में शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई

महान क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर के छात्रों द्वारा उनके शहीदी दिवस पर श्रद्धाजंलि दी गई। शिक्षकगण ने विद्यालय के छात्रों को भगत सिंह तथा उनके साथियों के बलिदान के बारे में बताते हुए कहा कि भगत सिंह का भारत को अंग्रेज़ों से आज़ाद करवाने का जुनून, देश भक्ति तथा देश प्यार नवयुवकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। विद्यार्थियों ने भगत सिंह के जीवन की प्रेरणादायक घटनाओं से

संबंधित स्वयंरचित कविताएँ भी सुनाईं। इसके बाद सम्पूर्ण वातावरण इनकलाब जिंदाबाद के नारों से गूँज उठा।

स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. (श्रीमती) नीरा शर्मा ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नवयुवकों एवं शहीदों के द्वारा प्रस्तुत की गई देशभक्ति तथा राष्ट्रवाद की इन घटनाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए तथा आत्मविश्लेषण करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि शहीदों के कारण मिले आज़ाद भारत पर उन्हें गर्व है तथा छात्रों को इस आज़ादी को सही अर्थों में बनाए रखने के लिए प्रण लेना चाहिए।

डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर में कैंपस साक्षात्कार का आयोजन

महाविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष में करियर एवं काउंसलिंग सेल की ओर से डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर में कैंपस साक्षात्कार का आयोजन किया गया। कॉलेज प्राचार्या डॉक्टर (श्रीमती) उर्मिल सेठी जी ने बताया कि महाविद्यालय के प्रांगण में कैंपस इंटरव्यू में कुल 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसके तहत उन छात्रों के विषय संबंधी ज्ञान और संचार कौशल का परीक्षण किया गया। प्राचार्या ने बताया कि आज के प्रतियोगिताओं के युग में केवल शिक्षा की डिग्री दिलवाना ही काफी नहीं है बल्कि उनका उचित सामंजस्य भी होना अति आवश्यक है। उच्च शिक्षा की संस्थाओं में रोजगार बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

इस कैंपस इंटरव्यू में डिवाइन लाइट पब्लिक स्कूल, महात्मा गांधी डी.ए.वी. स्कूल, एस्पायर इंटरनेशनल स्कूल, स्वामी केशवानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सरस्वती विद्या भवन स्कूल, इक जोत हाई स्कूल, आदि विभिन्न स्कूलों ने भाग लिया और अपने स्कूल में रिक्त पदों के लिए इंटरव्यू लिया। साथ–साथ कुछ विद्यार्थियों को ज्वाइन करने के लिए ऑफर दे दी गई और कुछ विद्यार्थियों को थोड़े समय पश्चात् ज्वाइन करने के लिए कहा गया।

गौरतलब है कि डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर प्रत्येक वर्ष कैंपस साक्षात्कार अपने कॉलेज में आयोजित करेगा और बहुत सारे विद्यार्थियों को रोजगार प्राप्त करने में मदद करने के साथ–साथ सुअवसर प्रदान करेगा। विभिन्न स्कूलों से आए प्रतिनिधियों ने विद्यार्थियों के ज्ञान की प्रशंसा की। विद्यार्थियों ने बताया इस साक्षात्कार से उनका हौंसला बढ़ा है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**